सम्मर स्पेशल
प्रतियोगिता में भाग लीजिए
और पाँच लेपटॉप जीतिए!

मई 2009 ■ Rs.20/-

चन्दामामा

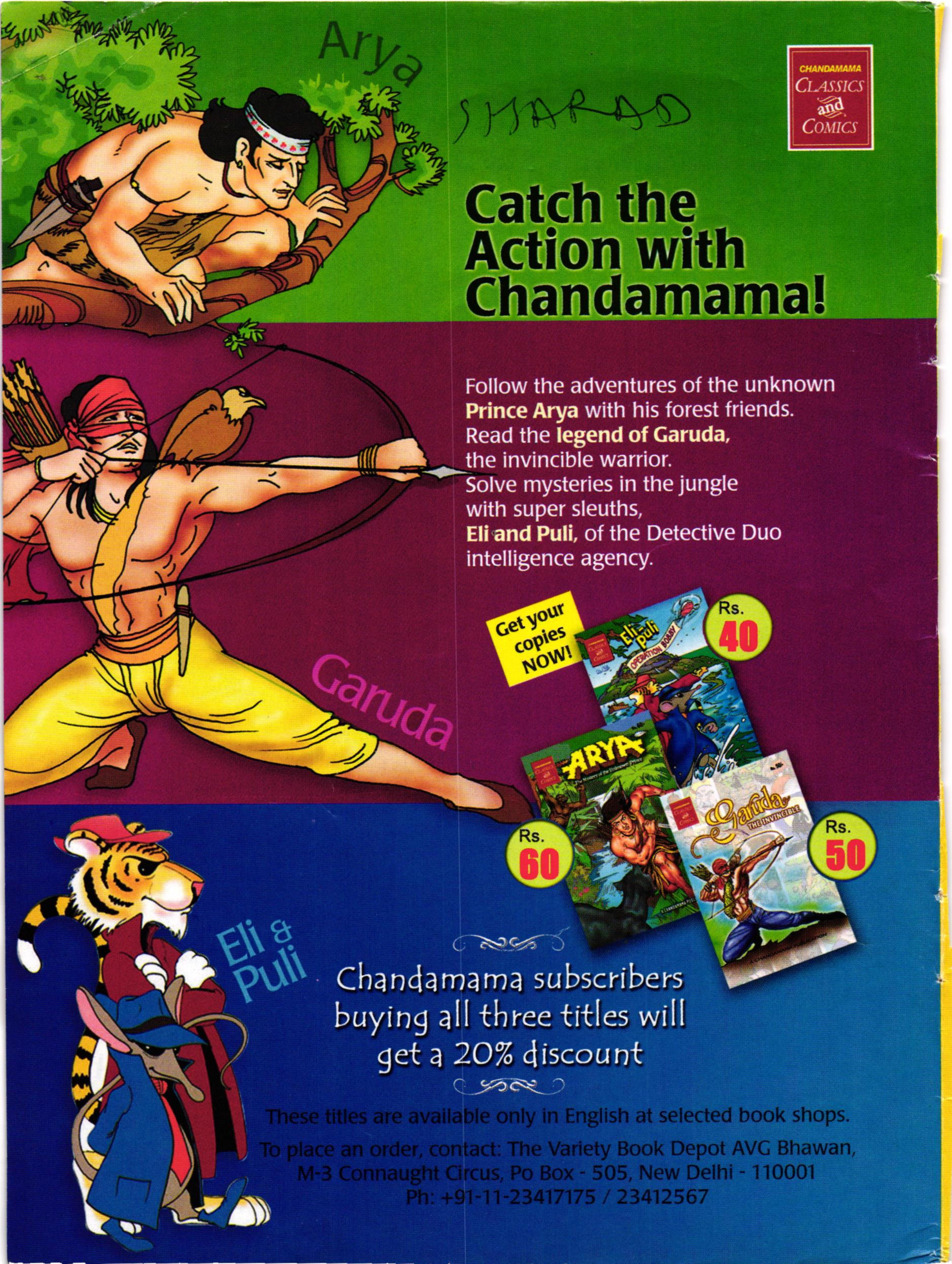
CHANDAMAMA CLASSICS and COMICS
Arya
Catch the Action with Chandamama!
Follow the adventures of the unknown Prince Arya with his forest friends. Read the legend of Garuda, the invincible warrior. Solve mysteries in the jungle with super sleuths, Eli and Puli, of the Detective Duo intelligence agency.
Garuda
Get your copies NOW!
Rs. 40
Rs. 60
Rs. 50
Eli & Puli
Chandamama subscribers buying all three titles will get a 20% discount
These titles are available only in English at selected book shops.
To place an order, contact: The Variety Book Depot AVG Bhawan, M-3 Connaught Circus, Po Box - 505, New Delhi - 110001
Ph: +91-11-23417175 / 23412567

मई 2009 ▪ Rs.20/-

चन्दामामा

सम्मर स्पेशल

पुरस्कार की बौछार!

13

सिक्किम दिवस

आओ स्वर्ग की सैर करें

28

पौराणिक युवा नायक

भरत

सम्मर स्पेशल प्रतियोगिता में भाग लीजिए और पाँच लेपटॉप जीतिए!

PARLE
यम्मी... पॉपिन्स!
Ram and Shyam
इन्फ़र्नो से टक्कर
एक बार राम और श्याम घर में बैठे थे. तभी उन्हें बाहर से चीखें सुनाई देती हैं.
वे दोनों खिड़की की ओर भागते हैं तो क्या देखते हैं कि...
लगता है पूरे शहर में आग लगी है.
ये तो इन्फ़र्नो है. वो आग के गोले बनाकर यहां-वहां फेंक रहा है. सभी ओर आग लगाकर तबाही मचा रहा है.
पूरे शहर में लगी आग बुझाने के लिए फ़ायर इंजन्स भी कम पड़ रहे हैं. पर हमने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली है.
अब दोनों को लगता है कि शहर को किसी भी क़ीमत पर बचाना ही होगा.
वे दोनों हायड्रो द्वारा दी गई वॉटर पिस्तौल निकालते हैं...
...और उसे इन्फ़र्नो पर खाली कर देते हैं. जल्द ही वो धुआं बनके उड़ जाता है.
आग बुझ जाती है और इन्फ़र्नो हार जाता है.
शहर में दुबारा शांति छा गई है. बच्चों और पॉपिन्स... आप दोनों का शुक्रिया.
POPPINS
GOLI RAINBOW WALI

PS2
PlayStation 2
feel
the power of
HANUMAN
BOY WARRIOR
In the game, HANUMAN Boy Warrior, needs to free the Earth from the evil forces of the Asuras and bring peace back to the Earth.
What is Hanuman's main weapon?
a) Dagger b) Sword c) Mace
PARTICIPATE IN THE CONTEST & WIN EXCITING PRIZES!*
SMS TO 54646
<PLAYSTATION><YOUR NAME><ANSWER> to 54646
For example, PLAYSTATION AMIT KUMAR A-
WWW.CHANDAMAMA.COM/PLAYSTATION
Log on & participate!
MAIL US
Your answer and complete contact details
TO: Chandamama Contests, Chandamama India Limited, No. 2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelangarai, Chennai – 600 041.
Subject: Playstation May 2009
Mega Prize
PlayStation 2
Consolation prizes
NEW HANUMAN Boy Warrior game CDs and lots more!
NOTES: Last date for entries is 31st May 2009. Prizes will be selected at random from the pool of correct entries. 1 mega prize and loads of consolation prizes to be won. *Conditions apply.

चन्दामामा सम्पुट-६० मई २००९ सञ्चिका - ५

अंतरंग

* पाठकों का पन्ना ...०८
* ताड़ का पेड़-बरगद का पेड़ ...०९
* जैसी करनी वैसी भरनी ...१२
* आओ स्वर्ग की सैर करें ...१३
* तेज फार्मूला ...१४
* पाताल दुर्ग-१० ...१५
* समाचार झलक ...२७
* पौराणिक युवा नायक-१२ ...२८
* आप के पन्ने ...३२
* मैन ऑफ द मिस्मैच ...३३
* चन्दामामा का क्रिकेट क्रिस्टल बॉल ...३४
* चित्रकथा को पूरा करो ...३९
* चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४ ...४१
* जातक कथा ...४७
* केशवती का जूड़ा ...५९
* आर्य-४ ...६३
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...६८
* चन्दामामा के घर का २०-२० क्रिकेट ...७०
* यूरेका ...७२
* भारत के धरोहर-स्थल ...७३
* खेल-कूद ...७६

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

विशेष आकर्षण

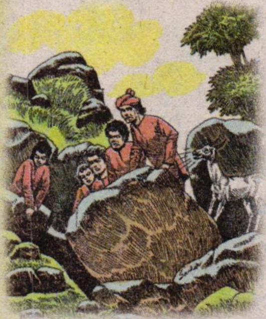

निरंकुश शासक (वेताल कथाएँ) ...२१

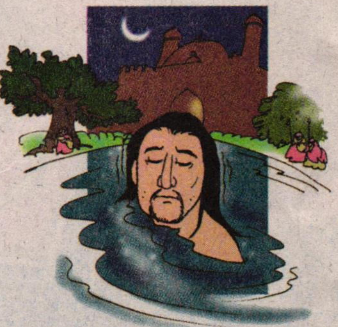

गर्माहट का स्त्रोत दूरी (बीरबल की कहानियाँ - २१) ...४२

मोहवकास पर भारी हमला (एक अमरीकी लोक कथा) ... ५०

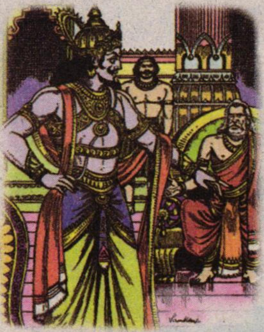

रामायण (युद्ध काण्ड-५) ...५३

बढ़ती गर्मी

गर्मी का मौसम आते ही देश तपती, जलती, कड़कती धूप में झुलसने लगता है। जैसे ही स्कूल बंद होते हैं, अनगिनत कैंप और क्रिया-कलाप केंद्र सारे शहर और कस्बों में मशरूम की तरह पनप उठते हैं। जो कौशल स्कूल के पाठ्यक्रमों में शामिल नहीं होता, उसे हरेक केन्द्र सिखाने को लालायित रहता है।

जो भी हो, आज बच्चों को सबसे ज़्यादा जिस कौशल को सिखाने की परम आवश्यकता है, वह पढ़ने का कौशल है। आज ऐसी मानसिकता को जगाने की आवश्यकता है जिससे वे पुस्तकें पढ़ें, उनकी गहराई में जाएँ और समझें। गर्मियों के महीने ऐसे कौशल को उत्पन्न करने के लिए उचित होता है। ऐसी निपुणता, निपुणता से दें जिससे बच्चे को पढ़ने में आनन्द की प्राप्ति हो। भारतीय संस्कृति की पौराणिक कहानियाँ, आधुनिक लेखकों की कहानियाँ-आर के नारायण, रस्किन बाँड, मुंशी प्रेमचन्द-नए भारतीय लेखकों की कहानियाँ, तथा पुराने लोकप्रिय साहित्यकार जैसे-शेक्सपीयर चॉसर, शेरीडन, विल्डे आदि लम्बी सूची है।

अभिभावक जब अपने बच्चों की उम्र के थे, उस समय उन्हें उतना ज्ञान नहीं था जितना आज उनके बच्चों को है, फ़र्क एक मात्र इतना ही है कि आज के बच्चों में अन्वेषक के गुणों की कमी है। आज बहुत सारी चीजों को जानना-समझना और सीखना होता है, इसके चलते ज़्यादातर ऊपरी तौर पर जानकारी हासिल करते हैं। अपने सम्पूर्ण विकास के लिए पढ़ना, घूमना, भाँति-भाँति के असंख्य विषयों पर विचार करना, असीम कल्पनाओं में विचरण करना आदि एक पक्का मार्ग है। जरा सोचो, रस्किन बाँड की कहानियों के पात्र रस्टी तुम हो और उन कहानियों को अपनी कल्पना से चलाओ या आर.के. नारायण की कहानियों में नायक के बचपन का यात्रा वृत्तांत जब वह आलबर्ट मिशन स्कूल में था।

पढ़ना मनुष्य के मस्तिष्क को शांत रखने की कला प्रदान करता है तथा एक व्यस्तता के मारे जीवन से चैन के कुछ पल देता है। यह बिना किसी होड़वाले जीवन से दूर कुछ करने की प्रेरणा देता है; तुम्हारी काल्पनिक दुनिया के शेक्सपीयर या प्रेमचंद को किसी के स्पर्धा नहीं करनी है। यह तुम्हारी अपनी दुनिया है।

इसलिए अपनी यात्रा की योजना में अच्छी तरह मज़ा लूटो, पर छुट्टियाँ अच्छी हो तथा अच्छा ज्ञानार्जन हो इसलिए गर्मियों के महीने में, अच्छी पुस्तकों को पैक करना मत भूलो, ये तुम्हें हमेशा साथ देंगी।

संपादक : एल. सुब्रह्मण्यन

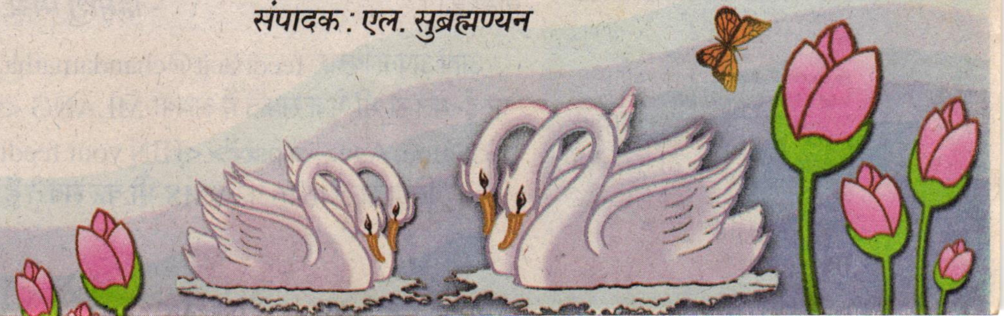

Founded by
B. Nagi Reddi and Chakrapani

Chairman : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Editor & Publisher : L. Subramanyan
Associate Editor : Sowmya Rajendran
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : Jayapandian
Asst. Editor-Copy & Pre-Production : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designers : M. Nagaraj, B. Thirumal

CIRCULATION TEAM :
Chennai : **T N Ravi Shankar,** *National Sales Manager,* Mobile +91 99620 70014
email : ravishankar.tn@chandamama.com
Fazal Khan, *Manager-Circulation & Institutional Sales - South,* Mobile +91 99625 67860
email : fazal.khan@chandamama.com
Mumbai : **Rajendra K Jadhav,** *Asst. Manager-Circulation,* Mobile +91 9320565048
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industry, Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road, No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : **Sushil Sharma,** *Circulation Manager-North,* Mobile +91 99110 91022
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
Goyal Business Centre, C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : **P. Murali,** *Asst. Circulation Manager -Karnataka* , Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street, Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage, Bangalore-560094,
Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : **Ananth Prakash,** *Circulation Manager-East,* Mobile +91 98362 82202, 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Ahmedabad : **Kalpesh Raval,** *Sales Officer-Circulation* Mobile +91 98245 19946
email : kalpesh.raval@chandamama.com
Content Head - Online : **Sowmya Bharadwaj**
email : online@chandamama.com
Assistant Manager - Marketing : **Vidhi Kumar**
email : marketing@chandamama.com
Advertisement :
email : sales@chandamama.com
Subscription Queries: L Govindasamy
e-mail : govindaswamy.l@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam
Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Production Executive : Panchakshari R Math
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelankarai, Chennai - 600 041 Phone +91 44 43992828, Fax +91 44 43992829
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

पाठकों का पन्ना

मैं एक सफल चिकित्सक हूँ। *चन्दामामा* मेरे बचपन की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका रही थी। ३० वर्षों के बाद फिर से इस पत्रिका को पढ़ रहा हूँ। काफी बदलाव के बाद, यह आज भी भारतीयता, रोचकता व नैतिक मूल्यों से भरपूर है। सुना है कि इस पत्रिका का प्रकाशन कुछ समय के लिए बंद हो गया था, शायद मेरे जैसे लोगों के कारण! ऐसा फिर कभी न हो, इसके लिए मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ।

- नवीन कुमार, दिल्ली

मैं बहुत प्रसन्न हूँ यह देखकर कि आपने आर्य-२ प्रारंभ कर दिया है। इससे पहले 'अवतार' निकलता था जो रोमांचकारी क्रिया-कलापों से भरपूर होता था। आर्य-२ भी अच्छी पकड़ रखता है। इसके उत्तम कोटि के चित्र तथा स्थितियाँ बड़ी आकर्षक हैं। मैं चाहता हूँ कि आर्य-२ लम्बे समय चलता रहे।

- अगतपति मोहन्ती, भुवनेश्वर

अपनी महान विभूतियों की जीवनी से किस्से-कहानियाँ देना क्यों बंद कर दिया है? हम बच्चे इन किस्सों से काफी कुछ सीखते हैं। नैतिक मूल्य देने वाली इन कहानियों को फिर से शुरू करें।

- शिवानी, मुंबई

मैं *चन्दामामा* का नियमित पाठक हूँ। मैं इसके हर एक अंक का गहन अध्ययन के साथ पढ़ता हूँ। यह पुस्तक रोचक होने के साथ ही ज्ञानवर्धक भी है। इससे बच्चे के दिमाग पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसमें प्रकाशित होनेवाली हर कहानी ज्ञानवर्धक एवं पठनीय होती है।

- हिमांशु मिश्र, वाराणसी

आप अपना विचार feedback@chandamama.com पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं अथवा MLANG <space> <Name, Age> <space> <HIN your feedback> लिखकर 54646 को SMS भी कर सकते हैं।

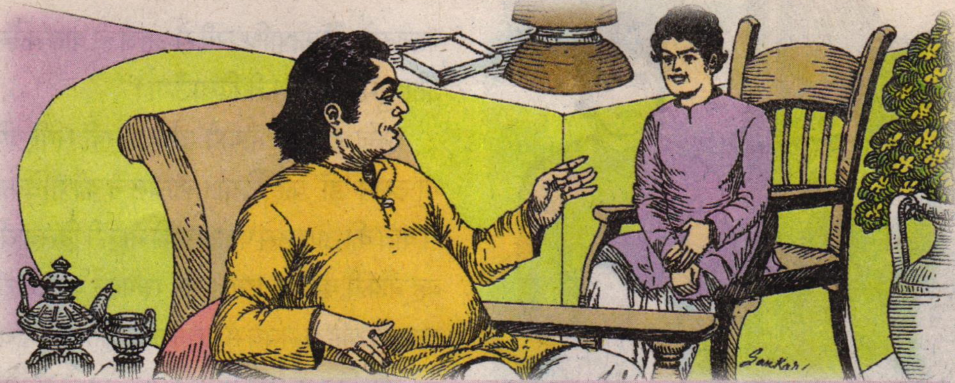

ताड़ का पेड़-बरगद का पेड़

सुनंद ने अपने शहर में पढ़ाई पूरी की। उसने ज़मींदार के दिवान में नौकरी पानी चाही। उसकी इच्छा को दृष्टि में रखते हुए उसके पिता ने उससे कहा, ''वहाँ हमारे शहर का बीरबल खज़ाने के पहरेदार का काम कर रहा है। जाकर उससे मिलना। नौकरी पाने का कोई उपाय सुझाएगा।''

सुनंद निकल पड़ा और शाम होते-होते करिबंदपुर पहुँचा। चूँकि अंधेरा छा रहा था, इसलिए उसने एक सराय में रात बिताने का निश्चय किया। खाना खाने के बाद वह सराय के मालिक से मिला। इधर-उधर की बातें करने के बाद सुनंद ने बताया कि वह किस काम पर यहाँ आया हुआ है। तब सराय के मालिक ने कहा, ''तुम्हारी बातों से स्पष्ट है कि तुम बहुत पढ़े-लिखे हो। दिवान में तुम्हें कोई नौकरी मिलेगी तो तुम्हारा भविष्य क्या होगा। इसलिए, जिस बीरबल का नाम तुम्हारे पिता ने सुझाया है, वह शायद तुम्हारी मदद नहीं कर पाएगा। शंकरदत्त ज़मींदार के प्रधान सलाहकारों में से एक है। वह भी तुम्हारे ही शहर का है। शायद तुम्हारे पिता उसे भूल गये होंगे। तुम पहले शंकरदत्त से मिलो तो तुम्हारा काम बन जाएगा।''

सुनंद को सराय के मालिक की सलाह सही लगी। सवेरे ही उठकर वह शंकरदत्त से मिला और अपना पूरा विवरण दिया। किन्तु शंकरदत्त के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं थी। उसने धीमे स्वर में कहा, ''कितने ही पढ़े-लिखे लोग नौकरी के लिए यहाँ आया करते हैं। उन्हें मालूम नहीं कि यहाँ नौकरी मिलना कठिन है। मुझे मालूम है, अभी दिवान में किसी भी प्रकार की नौकरी का पद खाली नहीं है।'' उसने सिर हिलाते हुए इस भाव से कहा कि अब तुम जा सकते हो।

सुनंद निराश हुआ। पर उसने अपने को संभाला

डा. शिवकुमार

और पिता के सुझाए बीरबल से जाकर मिला। यहाँ आने का कारण भी उसने उसे बताया। खुश होते हुए बीरबल ने सुनंद से कहा, ''अपना शहर छोड़े कई साल हो गए। तुम्हें देखते हुए लगता है, मानों अपने छोटे शहर को देख रहा हूँ।'' उसने शहर और वहाँ के जाने-पहचाने लोगों के बारे में पूछ-ताछ की।

इसके बाद उसने कहा, ''तुम तो बहुत ही पढ़े-लिखे जवान हो। इसलिए इसके योग्य नौकरी शायद मैं तुम्हें दिला नहीं सकूँगा। जो छोटी-सी नौकरी तुम्हें मिलेगी, वहाँ काम करते रहना। इसके बाद बड़ी नौकरी पाने के लिए कोशिश कर सकते हो। कोषाधिकारी बता रहे थे कि खजाने की सुरक्षा के लिए कुछ और लोगों को नियुक्त करना अनिवार्य है। तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो पहरेदार की नौकरी करते रहो। मैं कोषाधिकारी से आज ही बात करूँगा और तुम्हें वह नौकरी दिलाऊँगा।''

सुनंद को यह नौकरी अच्छी नहीं लगी, फिर भी उसने 'हाँ' कह दिया। बीरबल ने कोषाधिकारी से बात की और उसे पहरेदार की नौकरी दिलवायी। वह नौकरी पर लग गया। मन लगाकर काम करता रहा और थोड़े ही समय में उसने अच्छा नाम कमाया।

एक दिन रात को हिसाब-किताब से संबंधित अधिकारी परेशान दिखायी दे रहा था। वह बहुत ही चिंतित था। सुनंद अधिकारी की परेशानी को देख रहा था। धीरज बँधाकर सुनंद ने अधिकारी से कहा, ''महाशय, आप बुरा न समझें तो मैं एक बार हिसाब-किताब की छान बीन करूँ?''

''भला इन हिसाबों के बारे में तुम क्या जानो?'' अधिकारी ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा।

''महाशय, मैं गणित भली-भांति जानता हूँ। एक बार कोशिश करके देखूँगा।'' सुनंद ने कहा।

उसकी बातें सुनकर अधिकारी को विश्वास हुआ और हिसाब की किताब उसके सुपुर्द की। बड़ी ही दक्षता के साथ सुनंद ने खजाने के हिसाब की समस्या को दूर किया। चकित अधिकारी ने उसकी पढ़ाई, योग्यता आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की। इतना शिक्षित होते हुए भी उसका खजाने का पहरेदार बनकर काम करना अधिकारी को सही नहीं लगा।

वह अधिकारी बूढ़ा हो चुका था। इस उम्र में खजाने के काम को संभालना उससे हो नहीं पा रहा था। इसलिए उसने इसके पहले भी दो-तीन

बार ज़मींदार से कहा था कि इतना भारी काम मैं अकेले कर नहीं पा रहा हूँ। तब ज़मींदार ने उससे कहा भी, ''ठीक है। किसी योग्य व्यक्ति को ढूँढ़िए, आपके सहायक पद पर नियुक्त करेंगे।'' अब उस अधिकारी ने ज़मींदार से सुनंद के बारे में बताया और उनकी अनुमति लेकर सुनंद को अपने सहायक के पद पर नियुक्त किया।

सुनंद बहुत खुश हुआ। उसने अधिकारी को अपनी कृतज्ञता जताई। फिर वह बीरबल से मिला। उसने पूरा विषय उसे बताया और कहा, ''सब आपकी दया है। आपने उस दिन जो प्रोत्साहन दिया, उसी के कारण यह सब कुछ हुआ है'', कहकर उसने हाथ जोड़े।

''तुम्हारी योग्यता के आधार पर तुम्हें यह नौकरी मिली है। एक ही जगह के हैं, फिर भी इतनी भी मदद न करूँ तो मैं किस काम का। देखो, तुम्हारे पिताजी यह जानकर बहुत खुश होंगे। आज ही चले जाना और यह शुभ समाचार उन्हें सुनाना'', बीरबल ने कहा।

सुनंद अपने पिता से मिला और यह शुभ समाचार सुनाया। शंकरदत्त से उसका जो कड़ुवा अनुभव हुआ था, उसके बारे में भी बताया।

''हाँ, शंकरदत्त भी हमारे ही शहर का है। उसे बचपन से जानता हूँ। क्या तुम जानते हो, मैंने उसके बारे में तुमसे क्यों नहीं बताया? वह बहुत बड़ी नौकरी कर रहा है। पर उसमें दूसरों की मदद करने का गुण है ही नहीं। कुछ लोग अपने जीवन में बहुत बड़े बनते हैं पर, वे अपने ही लोगों की ज़रा भी मदद नहीं करते। इनकी ऊँचाई ताड़ के पेड़ की ऊँचाई जैसी है। वह किसी को छाया नहीं देता। इसीलिए मैंने उसका जिक्र ही नहीं किया। बीरबल छोटी नौकरी कर रहा है, फिर भी वह दूसरों की मदद करता है। उपकार करने की उसकी प्रवृत्ति है। वह छाया देनेवाले बरगद के पेड़ जैसा है, इसीलिए मैंने तुमसे उसी से मिलने को कहा था। तुम भी बीरबल को अपना आदर्श मानो और दूसरों की जितनी हो सके सहायता करते रहना।'' पिता ने मुस्कुराते हुए उससे कहा।

पिता के व्यावहारिक ज्ञान पर उसे आश्चर्य हुआ।

जैसी करनी वैसी भरनी

रघुनाथ का जन्म रामापुर में हुआ। वह वहीं पलकर बड़ा भी हुआ। किन्तु वहाँ उसका रहना संभव नहीं हो पाया, क्योंकि वहाँ उसकी कोई आमदनी नहीं थी। वह परिवार सहित रंगनाथपुर चला गया और एक पंसारी की दुकान में काम करने लगा। उसकी पत्नी ने मिठाइयों की एक दुकान अपने ही घर में शुरू कर दी। पति-पत्नी मेहनत करने लगे, इसलिए दो ही सालों के अंदर रघुनाथ ने पंसारी की अपनी ही दुकान खोली। तीन सालों के बाद उन्होंने एक छोटा-सा घर भी बना लिया।

उसका भाई नागभूषण गृहप्रवेश के दिन आया और उनकी सुधरी स्थिति को देखकर चकित रह गया। झूठी प्रशंसा करते हुए उसने उनसे पूछा, ''पाँच सालों के अंदर ही तुमने इतना धन कैसे कमाया?''

''सब कुछ भगवान की दया है। जब तक अपने गाँव में रहे, दुर्भाग्य हमारा पीछा करता रहा। इसलिए उस दुर्भाग्य को एक पेटी में बंद कर दी और उस गाँव के पिछवाड़े के नीचे के पेड़ के नीचे गाड़ दी। मेहनत करके मैं इस स्थिति तक पहुँचा।''

भाई ने विषय जान लिया और उसी रात को भाई के बताये पेड़ के नीचे गाड़ी गयी पेटी ऊपर निकाली और उसे खोली। पेटी में से बाहर कूदे आकार से उसने कहा, ''मेरा भाई रंगनाथपुर में रहता है, वहाँ जाओ।'' ''मैं नहीं जाऊँगा। इतने दिनों तक मैं उसी के साथ रहा, पर उसने मुझे यहाँ गाड़ दिया और चला गया। तुम्हारी ही वजह से मैं इस जेल से बाहर आया। तुम्हें बहुत पसंद करता हूँ। किसी भी हालत में मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।'' कहते हुए वह आकार ग़ायब हो गया।

तब से लेकर नागभूषण का दुर्भाग्य सुस्ती के रूप में उसके संग-संग रहने लगा। उसे कितने ही कष्टों का सामना करना पड़ा। जो भी काम वह करता था, उसका फल बुरा ही होता था। वह अपने आप बड़बड़ाने लगा, ''बड़ों ने ठीक ही कहा कि किसी को हानि पहुँचाओगे तो हानि तुम्हारी ही होगी।'' कहते हुए वह चिंतित होने लगा।

- उमा श्रीधर

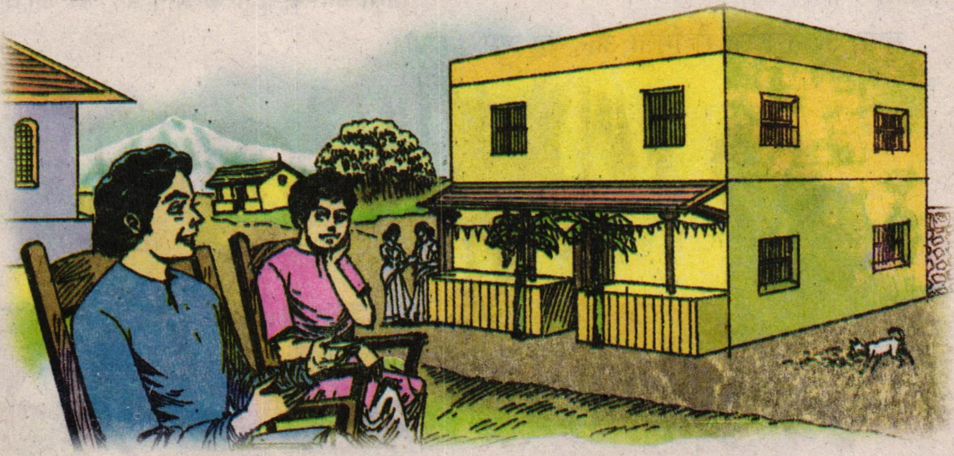

सिक्किम दिवस

आओ स्वर्ग की सैर करें

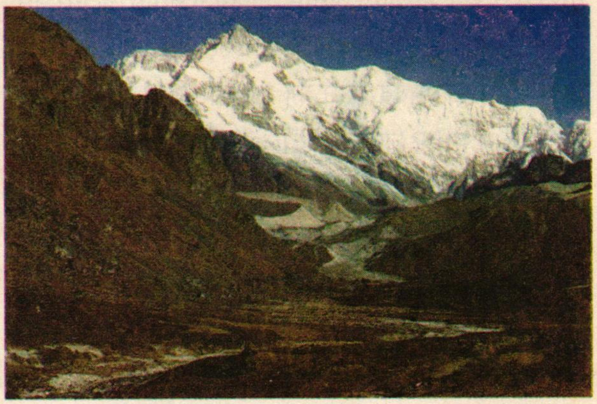

Courtesy: Wikipedia.org, under the terms of the GNU Free Documentation License

मई के महीने का बड़ी बेसब्री से इंतजार किया जाता है क्योंकि यह मौजभरी छुट्टियों का महीना होता है। जब बस्ते को छूना नहीं पड़ता, न ही दिन याद रखना पड़ता है कि आज कौन-सा वार है, बल्कि तपती दोपहर में गली में क्रिकेट खेलना, रसीले आमों का मज़ा लेना और ठंडी-ठंडी आइसक्रीम खाना कितना आनंददायक होता है, पूछो मत।

सिक्किम निवासियों के लिए मई का महीना विशेष महत्व रखता है जब छुट्टियों में आनन्द उत्सव मनाया जाता है। १६ मई इनका महत्वपूर्ण यादगार का दिन है। सन् १९७५ में इसने राजतंत्र से मुक्त होकर शान से प्रजातंत्र के नई प्रशासन व्यवस्था में प्रवेश किया था, 'सिक्किम राष्ट्रीय दिवस', अतः यह राष्ट्रीय छुट्टी का दिन है।

सिक्किम प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। वेशुमार हरियाली तथा हरी सब्जियाँ, ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ, खूबसूरत लुभावनी प्यारी घाटियाँ-पर्यटकों के लिए सचमुच स्वर्ग है। महान कंचनजंगा पर्वत सिक्किम निवासियों के लिए पर्वत से कहीं बढ़कर है। यह उनके लिए उनका अभिभावक देवता है जो उनकी रक्षा करता है तथा शान्ति एवं समृद्धि प्रदान करता है।

चारों ओर प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर वातावरण के मध्य में स्थित सिक्किम अपना राष्ट्रीय उत्सव मनाता है। इसकी खूबसूरती और भव्यता का कोई सानी नहीं।

सिक्किम को प्रजातांत्रिक राज्य बने ३४ वर्ष ही हुए हैं और शुरू से आजतक सिक्किम निवासी अपनी सरकार को भरपूर योगदन प्रदान करते आ रहे हैं जिससे सिक्किम समृद्ध राज्य बन सके। पहला यह देखना कि हर क्षेत्र में विकास हो। सिक्किम के मुख्यमंत्री पवन चामलिंग की दृढ़ निष्ठा, उनकी घोषणा से स्पष्ट है- ''मैं अपने लोगों को धोखा देने की अपेक्षा मर जाना पसन्द करूँगा।''

जो लोग सिक्किम में रहते हैं निःसंदेह वे इस बात से सहमत होंगे कि सिक्किम में उत्सव होते रहते हैं। आप उनकी प्रकृति के साथ जुड़ना चाहेंगे? इस बात का पता लगाओ कि सिक्किम में क्या मिलता है। सिक्किम दिवस की बधाई हो।

तेज फार्मूला

इस माह का प्रश्न है :

माया ने अपना जन्मदिन अनाथ आश्रम में मनाने का निश्चय किया है। वह अपने जेब-खर्च का इस्तेमाल करेगी। उसके दादा जी ने उसे मदद करने का आश्वासन दिया है।

अनाथाश्रम में ३२ लड़कियाँ और ३० लड़के हैं।

प्रत्येक के खाने का खर्च प्रतिदिन ४० रुपए है।

'पार्टी-टोपी' की कीमत १० रुपए हैं।

माया हर बच्चे को लकड़ी का पेंसिल होल्डर देना चाहती है, जिसकी कीमत १८ रुपये है। माया के पास ३००० रुपये हैं।

क्या उसके दादाजी को उसे और पैसे देने पड़ेंगे? अगर देने पड़ेंगे तो कितने?

तेज फार्मूला देने वाले को ५००/- रुपये का इनाम मिलेगा।

अपने प्रवेश फार्म मई ३१ के पहले इस पते पर भेजें :

संपादक, चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड, २/५१३ *(पुराना नं. ३/३९६),*

संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेईन रोड़, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

या ई-मेल करें: contests@chandamama.com

नोट: इस प्रश्न का उत्तर जुलाई अंक में दिया जाएगा।

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-२ मार्च २००९ उत्तर:

१. भारतीय मानक समय (आइ.एस.टी.) ग्रीनव्हिच के समय (जी.एम.टी.) से ५ $^{1}/_{2}$ घण्टे आगे है; २. 'टीटीकाका' समुद्र स्तर से १२,५०० फुट की ऊँचाई पर है तथा 'डेड सी' समुद्र स्तर से १,२९० फुट नीचे है; ३. सुन्दरबन, गंगा और ब्रह्मपुत्र; ४. जून २१; ५. कैरो, इजिप्ट की राजधानी; ६. १७७ नहरें; ७. खेतरी, राजस्थान में; ८. त्रिपुरा, बांग्लादेश।

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-२ मार्च २००९ :

चन्दामामा के हिन्दी संस्करण के पाठकों से प्राप्त कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पायी गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। हमारे पाठकों के लाभार्थ प्रश्नोत्तरी-२ के उत्तर ऊपर दिये गये हैं। कृपया सभी चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहें।

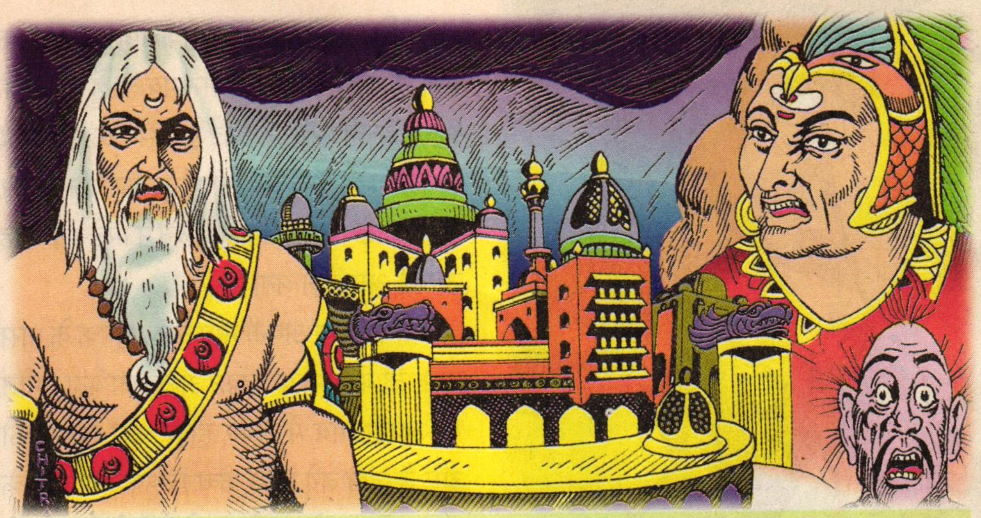

पाताल दुर्ग

10

(धूमक और सोमक की विरूप नाम के जंगलवासी नौजवान से दोस्ती हो गई, उसके साथ वे एक नदी तक गए। वहाँ उनका एक भील सरदार से परिचय हुआ। वे नावों पर नदी पार कर रहे थे कि एक बड़ा गरुड़ पक्षी आया और मन्त्रदण्ड को लेकर आकाश में उड़ा। विरूप ने एक रस्सी में फन्दा बनाकर गरुड़ की ओर फेंका। उसके बाद–)

विरूप का फेंका हुआ फन्दा गरुड़ पक्षी के एक डैने में फँस गया। यह मौका देख विरूप ने जोर से रस्सी खींची। चूँकि पक्षी तेज़ी से उड़ रहा था, इसलिए फन्दा और कसता गया। गरुड़ एक क्षण के लिए स्तम्भित-सा रहा। फिर जोर से चीखा, फिर पंख फड़फड़ाकर उसने उड़ने की कोशिश की।

विरूप स्वयं तो रस्सी खींचता ही जाता था, उसने चप्पू चलानेवाले भीलों से भी उसे खींचने के लिए कहा।

''विरूप, रस्सी मत छोड़ो, मैं आ रहा हूँ।'' कहता सोमक जोर से चिल्लाया, अपनी नाव में उसकी नाव के पास गया। तब तक गरुड़ पक्षी भी ढीला पड़ गया था। जब तीन बलवान लोगों ने उसे खींचना शुरू किया, तो वह एक तरफ़ झुक गया और छटपटाने लगा। धूमक ने तलवार

निकालकर, पक्षी के गले का निशाना बनाकर उसे छोड़ा। वह निशाने पर न लगकर उसकी छाती पर लगा। उसके कारण वह मन्त्रदण्ड को छोड़कर नदी में गिरकर तड़पने लगा।

सोमक बड़ा खुश हुआ। "धूमक, कोई डर नहीं, मैं नाव ला रहा हूँ।" वह जोर से चिल्लाया और नाव को धूमक की ओर ले जाने लगा। इस बीच विरूप की नाव में खड़े घोड़े यूँ विदके और नाव के एक ओर चले गए कि वह उलट गई और वे पानी में जा गिरे। उनके साथ विरूप और दो भील भी जा गिरे। वे दोनों यद्यपि तैरना जानते थे, पर बहाव इतना तेज़ था कि वे यूँ चिल्लाए, जैसे वे डूब रहे हों। विरूप ने दो हाथ मारे और बहती नाव को पकड़ लिया। "अरे, हमने न सोचा था कि ये भील इतने डरपोक हैं, आओ चढ़ो नाव पर।" फिर उसने कहा, "सोमक बाबू, आप धूमक बाबू के पास जाइए। मैं तैर सकता हूँ। जिसके कारण इतनी मुसीबत आई है, उस गरुड़ को फन्दे से न निकलने देंगे। जब तक मैं उसका दिल भूनकर न खा जाऊँगा, तब तक मुझे चैन न मिलेगा।" वह उसकी ओर तैरने लगा।

सोमक जब अपनी नाव लेकर धूमक के पास गया, तो वह उसे पकड़कर अन्दर जा बैठा। भील भी अपनी नाव में सवार होकर उसे विरूप की ओर ले जाने लगे। इस बीच विरूप जब गरुड़ के पास पहुँचा, तो उसने अपने पैरों से विरूप को जोर से मारा। जब उसके नाखून विरूप के शरीर पर लगे, तो उसने आगे पीछे न देखा और उससे भिड़ गया। आकाश में उड़नेवाले पक्षी और भूमि पर चलनेवाले मनुष्य को पानी में मछलियों की तरह लड़ता देख, धूमक और सोमक को बड़ा आश्चर्य हुआ।

"अगर किसी मगर ने देख लिया, तो दोनों को निगलकर अपने गढ़े में चला जाएगा। नावों को जल्दी विरूप की ओर चलाओ।" धूमक ने आज्ञा दी।

जल्दी ही दोनों नावें विरूप के पास पहुँची। तब विरूप उसका गला एक हाथ में पकड़कर, दूसरे हाथ से उसके पैर पकड़ने की कोशिश कर रहा था। नाव के पास पहुँचते ही धूमक ने कहा, "विरूप तुम नाव पर आओ। जो पक्षी फन्दे में फंस गया है, वह चला कहाँ जायेगा?" उसने उसके कन्धे पकड़कर जबर्दस्ती नाव में खींच

लिया। विरूप के शरीर पर कई जगह नाखून लगे हुए थे। धूमक और सोमक ने मिलकर गरुड़ को भी नाव पर खींच लिया।

''यह गरुड़ पक्षी नहीं है। कोई राक्षस है।'' सोमक ने पक्षी की ओर तलवार घुमाते हुए कहा।

''हुजूर, इससे भी भयंकर पक्षी इन पहाड़ों में हैं। हम कभी-कभी इन्हें फन्दों में डालकर पकड़ते रहते हैं। सिखाने पर इनसे काफी मदद भी मिल सकती है।'' विरूप ने गरुड़ पक्षी की ओर प्रेम से देखते हुए कहा।

धूमक वह सुनकर जोर से हँसा। उसने कहा, ''फिर तुम्हारी कसम का क्या हुआ? तुम तो कह रहे थे कि इसका दिल भूनकर खा जाओगे? अपनी जिस्म तो देखो, कितने घाव लगे हैं, किस तरह खून वह रहा है।''

विरूप ने अपने घावों को देखकर कहा, ''जरा नदी पार करने दो, मैं इन घावों को एक घड़ी में ठीक कर लूँगा।''

इतने में भीलों ने चप्पू चलाकर दोनों नावों को नदी के पार पहुँचा दिया। वे दोनों घोड़े, जो नदी में बह गए थे, किनारे पहुँचकर एक पेड़ के नीचे खड़े-खड़े हिनहिना रहे थे। ''अच्छा हुआ, दोनों घोड़े जंगल में नहीं भाग गए।'' कहता सोमक उनके पास गया, उनकी लगाम पकड़कर वह पास की हरी घास की ओर गया।

विरूप ने गरुड़ को नाव से किनारे पर खींचा। उसकी रस्सी को उसने एक पेड़ से बाँध दिया। अपने घावों को औषधि लगाने के लिए पास के पौधों के पास गया और इस बीच धूमक अपने गीले कपड़ों को निचोड़कर सुखाने लगा।

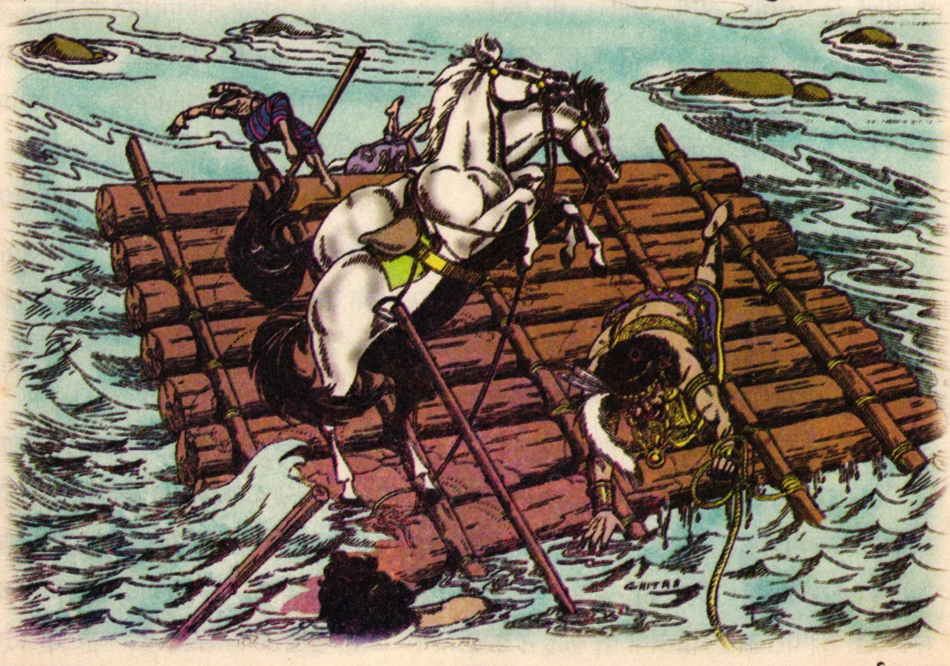

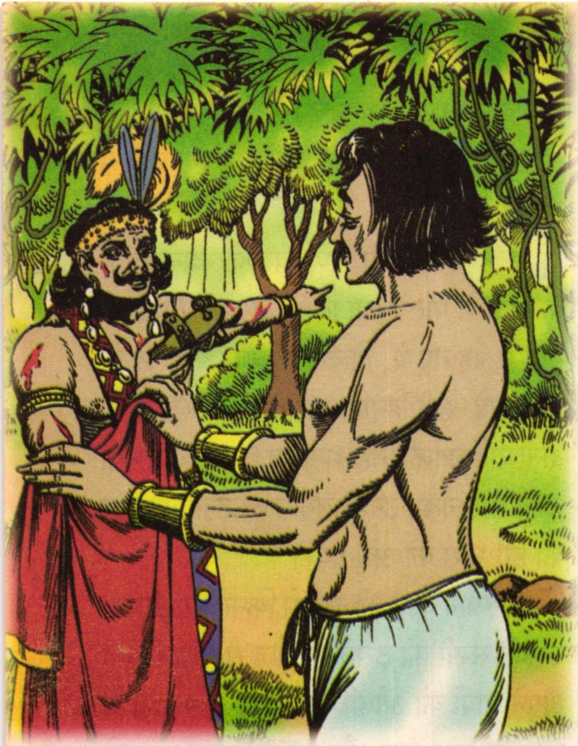

पन्द्रह मिनट बीत गए। यकायक विरूप पेड़ों के पीछे से ''बाबू... बाबू, आफत आ गई।'' कहता एक खड़ाऊँ हाथ में लेकर धूमक के पास भागा-भागा आया।

''यह कालशम्बर मान्त्रिक की खड़ाऊँ है?'' धूमक ने पूछा।

''हाँ... बाबू, मैं अच्छी तरह जानता हूँ। उस पर जरूर कोई न कोई आफत आई है, आपने कहा था कि कुम्भीर नाम का राक्षस उनका शत्रु था। मुझे सन्देह हो रहा है कहीं उसने मान्त्रिक को मार तो नहीं दिया है?'' विरूप ने डरते हुए कहा।

''कालशम्भर इतनी आसानी से मरनेवाला नहीं है? भले ही राक्षस हो, पर कुम्भीर उतना दुष्ट नहीं है। उसकी बात करने का लहजा, व्यवहार मैंने देखा है। पर जरूर मान्त्रिक पर कोई न कोई आफत आई है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।'' धूमक ने कहा।

विरूप कुछ कहना ही चाहता था कि सोमक ने कहा, ''धूमक, जरा जल्दी इधर तो आओ।'' कहता, तलवार निकालकर पौधों की ओर गया। घोड़ों में से एक नथने बड़े करके, पीछे के पैरों पर खड़े होकर सोमक की लगाम से छूटकर भागने की ताक में था।

धूमक और विरूप जल्दी-जल्दी सोमक के पास भागे। सोमक ने पौधों को दिखाकर कहा, ''उनके पीछे से आहें, कराहट सुनाई पड़ रही हैं। पहले तो मैंने परवाह नहीं की। पर जब घोड़े ने डर के मारे भागने की कोशिश की, तब मुझे सन्देह हुआ।''

धूमक ने तलवार निकालकर कहा, ''जय कालशम्भा,'' और वह पौधों में जा घुसा। उसके पीछे ही. ''शाम्भवी'' कहता विरूप घुसा। सोमक भी एक और रास्ते से पौधों की ओर चला।''

''अरे भाई, मरे पर क्यों तलवार उठाते हो? मैं राक्षस नहीं हूँ। पर मनुष्य भी नहीं हूँ। कालकलि राक्षस के यहाँ पच्चीस साल काम करने के कारण मुझे ऐसा रूप मिला है, जो न राक्षस का है, न मनुष्य का ही।'' ये बातें सुनाई पड़ीं।

उसकी बातें सुनकर तीनों ऐसे रुके, जैसे घबरा गए हों। वे एक-एक कदम करके पीछे हटने लगे। धंसी आँखें, गंजा सिर, कहीं-कहीं सुओं की तरह खड़े बाल। वह मनुष्य बोलता शव-सा लगता था।

''यह खड़ाऊँ किसकी है? यह मन्त्रदण्ड

किसका है? ये दोनों कालशम्बर मान्त्रिक के ही हैं न?'' उस विकृत व्यक्ति ने हाँफते हुए कहा।

''हाँ, कालशम्बर के ही हैं? पर तुम्हें कैसे पता लगा? तुम कौन हो?'' धूमक ने पूछा।

''मैं कुछ क्षणों में ही मरनेवाला हूँ। तब तुम जानकर क्या करोगे कि मैं कौन हूँ? कभी मैं इसी प्रदेश का था। मैं कालकलि राक्षस के सेवकों के हाथ पड़ गया और पच्चीस वर्ष उसकी कैद में रहा। उन्होंने मुझे बहुत डराया। जान मारने की धमकी दी। जब कभी वे इस प्रान्त के लोगों को उठाकर ले जाना चाहते, तो मुझे साथ लाते क्योंकि मैं इसी प्रान्त का हूँ। मैंने भागने की कोशिश की और उसका नतीजा ये घाव हैं।'' कहता वह व्यक्ति आँखें मूँदकर, लम्बी लम्बी साँसें लेने लगा।

धूमक को सन्देह हुआ कि वह काफी देर तक जिंदा न रहेगा, उसने उसके पास जाकर कहा, ''हम उस कालकलि से बदला लेने ही जा रहे हैं। उसे मारकर हम तुम्हारी आत्मा को शान्ति पहुँचाएँगे। पर एक बात बताओ। क्या उसके आदमियों ने कालशम्बर को मरवा दिया है?''

''वह तो मैं साफ-साफ नहीं कह सकता, उसने और उसके साथ के युवक ने उन दुष्टों से जमकर लड़ना शुरू किया। उसी गड़बड़ी में मैंने भागने की कोशिश की। मुझे तलवारों से भोंककर वे यहाँ छोड़ गए हैं।'' उस विकृत व्यक्ति ने कहा।

''क्या बता सकते हो, वे क्रूर किस तरफ़ गये हैं?'' धूमक ने पूछा।

''नहीं कह सकता। पर वे जिस नाव पर आये

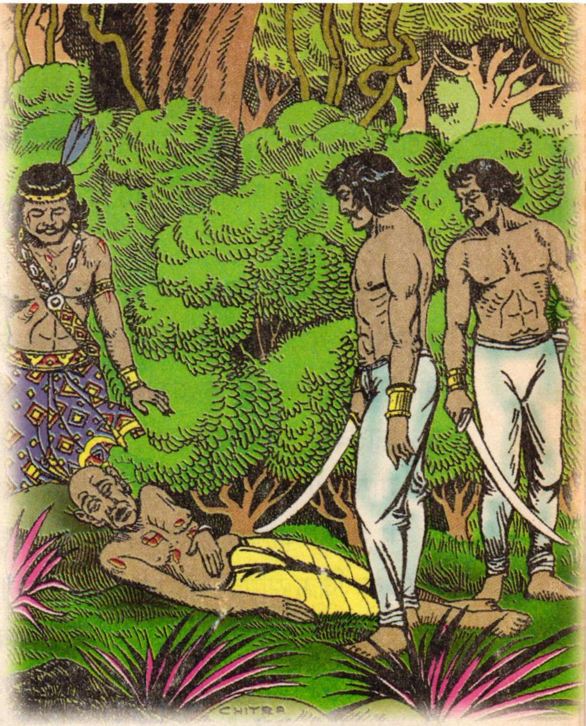

थे, वह नाव उस घाट में है, जहाँ नदी पहाड़ का चक्कर काटती है। जैसा तुमने वचन दिया है, उस कालकलि को मारकर मेरी आत्मा को शान्ति पहुँचाइए।'' कहता वह विकृत व्यक्ति जोर से एक बार काँपा। फिर काठ की तरह कस-सा गया।

धूमक ने अपने एक वस्त्र से उसके शरीर को ढक दिया। पीछे मुड़कर पूछा, ''क्यों विरूप, जानते हो कहाँ यह नदी पहाड़ के पास मुड़ती है?''

''मालूम है साहब, वह यहाँ से खास दूर नहीं है। चलिए चलें।'' विरूप ने कहा।

भीलों से घोड़ों को हिफाजत से देखने के लिए कह, दोनों नदी के मोड़ की ओर निकले। चार पाँच मिनट में उन्होंने नदी में, जहाँ वह पहाड़ का चक्कर काटती थी, एक घाट देखा और उसमें एक नाव देखी। वे पेड़ पौधों के पीछे छुपते-छुपते उस

ओर गये। वे घाट के पास पहुँचे। उसके किनारे के पेड़ों पर चढ़कर, वे नाव को ध्यान से देखने लगे। उसमें कोई न था। पर नाव के चारों ओर कितने ही मगर घूम रहे थे।

चारों ओर सन्नाटा था। दूर-दूर तक कहीं एक बंदर भी न था। इस निर्जन निस्तब्ध वातावरण को देखकर धूमक को कुछ खटकने लगा। कहीं उस कालकलि को खबर तो नहीं हो गई है कि हम उसे मारने आ रहे हैं और वह अपनी किसी चाल से हमें मारना चाहता हो। धूमक ने मन में उठे संदेह का जिक्र सोमक और विरूप से किया।

''कहते तो तुम ठीक हो।'' सोमक ने विचार प्रकट किया। ''अगर बन्दर गिलहरी आदि भी दिखाई नहीं दे रहे हैं तो जंगल के राजा बब्बर शेर के आगमन की सूचना भी तो हो सकती है।'' विरूप ने कहा। ''नहीं, वह जंगल का राजा है, उसके आने पर छाया सन्नाटा और इस समय छाया सन्नाटा बिलकुल अलग है। मुझे कोई दुर्घटना होने की आशंका है।'' धूमक ने कहा।

वे वहीं चट्टानों पर बैठ विचार करने लगे, एक जोर का 'छप्पाक' स्वर हुआ। वे सहम गए और उस ओर देखने लगे। एक दो मुँहवाला लम्बा साँप ऊपर के झाड़ से उड़कर नीचे के झाड़ पर आ गया था। वे सतर्क हो गए। ''ये कोई राक्षस तो नहीं?'' सोमक ने संदेह प्रकट किया। ''यहाँ से चलो, मुझे कुछ खटक रहा है।'' धूमक ने कहा।

''तो तुम्हीं बताओ, क्या करना चाहिए। नाव के पास जाएँ या दूर से उस पर नज़र रखें?'' सोमक ने पूछा। ''अभी पेड़ों पर रहकर निगरानी रखनी चाहिए।'' धूमक ने सलाह दी।

''अरे! पेड़ पर जामुन लगे हैं। चलो इसी बहाने कुछ खाया जाए।'' विरूप ने कहा।

वे मीठे-मीठे जामुनों का आनंद लेने लगे। एकाएक धूमक को लगा कि मगर मगर नहीं बल्कि राक्षस है।

''सोमू, एक सिर पर यूँ बाण मार कि उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ।'' धूमक ने कहा।

सोमक बाण छोड़नेवाला था कि विरूप ने ''... साहब...'' कुछ कहना चाहा। परन्तु इतने में सोमक का बाण एक मगर के सिर पर तपाक से लगा। मगर पानी में उछला और मनुष्य की तरह चीखा।

(अभी है)

निरंकुश शासक

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारकर उसे अपने कंधे पर डाल लिया और श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, "राजन्, किस दुष्ट को कठोर दंड देने का निर्णय लेकर इस आधी रात को निकल पड़े? किन्तु, जब दंड देने का समय आ जाये, तब इसी निर्णय पर डटे रहोगे या अपने निर्णय से मुकर जाओगे? क्या जिसने तुम्हारे अधिकारों को अपने हाथ में लिया और असंबद्ध फैसले सुनाकर तुम्हें और तुम्हारे शासन को धिक्कारा, उस दुष्ट को दंड देने निकल पड़े हो? मैं एक शासक को जानता हूँ, जिसने उस दुष्ट को पहचाना, पर उसे दंड दिये बिना पीछे हट गया। ऐसे विषयों में तुम सावधान रहो, इसके लिए ऐसे एक राजा की

वेताल कथा

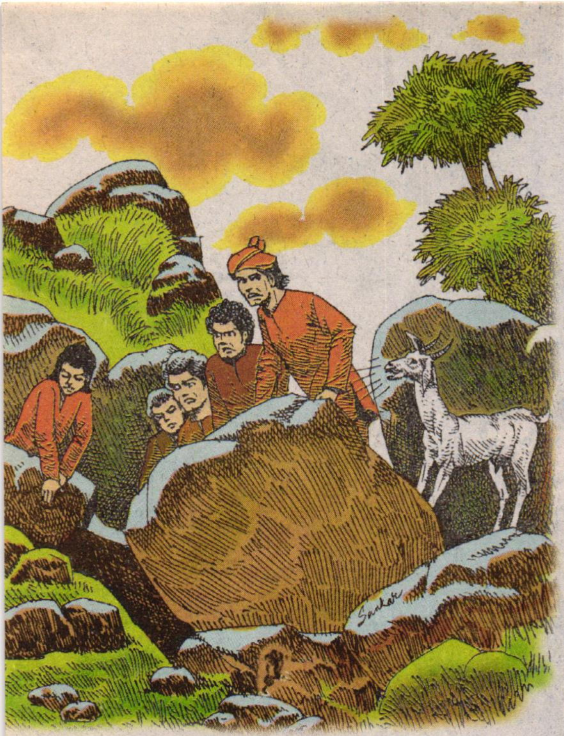

कहानी सुनाने जा रहा हूँ। शांत होकर उसकी कहानी ध्यान से सुनो।'' फिर वेताल उस राजा की कहानी यों सुनाने लगा:

वज्रगिरि का राजा राजशेखर निरंकुश राजा था। प्रजा के क्षेम के लिए पीढ़ियों से चले आये कठोर नियमों को वह अमल में लाता था और इन विषयों में काफी सावधानी बरतता था। इतनी सावधानी के बाद भी उसके राज्य में छोटे मोटे अपराध हुआ करते थे, जिसपर उसे आश्चर्य होता था।

नगर से सटे हुए रामगिरि पर्वत के उस पार के गुणका नामक गाँव से पाँच युवक हर दिन बकरियों को चराने के लिए जंगल में जाते थे। वहाँ पहुँचने के बाद वे बकरियों को छोड़ देते थे और एक पेड़ के नीचे बैठकर गपशप किया करते थे। उनमें से एक लोकगीत गाने में माहिर था। दूसरा बांसुरी बजाने में पटु था। तीसरा हँसी भरी बातें कहते हुए सबको हँसाता था। चौथा, जड़ी-बूटियों से इलाज करने में होशियार था। पाँचवाँ, सुदर्शन किसी का भी अनुकरण करने में अव्वल था। गाँव के प्रमुखों से लेकर महाराज तक के हावभावों की नक़ल उतारने में चतुर था। उनका अनुकरण करते हुए समय-समय पर वह अपने दोस्तों को हँसी में डुबो देता था।

एक दिन एक बकरी टीले पर जाकर गुम हो गयी। ये युवक उसे ढूँढ़ने में लग गए। वह टीले पर दो चट्टानों के बीच अटक गई थी। उसका एक पैर उन चट्टानों के बीच फंस गया और वह उसे बाहर निकाल नहीं पा रही थी। वह चिल्लाती रही, पर उसकी सहायता करने कोई नहीं आया। दोस्त आख़िर वहाँ पहुँचे और बकरी को बचाया।

उस समय उन्हें उस चट्टान के नीचे एक सुरंग मार्ग दिखायी पड़ा। बड़े ही उत्साह के साथ वे उसमें उतरे और आगे बढ़ते गए। विपत्ति के समय राज परिवार के लोग उस मार्ग से बाहर आ सकें इसलिए बनाया गया यह गुप्त मार्ग था।

राजा शयन कक्ष में नहीं थे, पर वहाँ उनकी तस्वीर देखकर पाँचों दोस्त चकित रह गए। उस तस्वीर को देखकर उन्हें लगा कि मानों सुदर्शन को राजा का वेष पहनाया गया हो।

चुपचाप वे उसी मार्ग से बाहर आ गए, पर उन पाँचों ने यह रहस्य किसी और से नहीं बताया। वे आपस में इस बात को लेकर चर्चा करने लगे। तब सुदर्शन ने अपने मन की बात कहते हुए दोस्तों से कहा, ''एक दिन के लिए ही सही, मैं राजा

बनना चाहता हूँ।'' उसकी बात सुनकर दोस्त आश्चर्य में डूब गए। फिर भी सुदर्शन के समय-बोध, अक़्लमंदी पर उन्हें पूरा-पूरा विश्वास था। इसलिए उन्होंने सुदर्शन की बात मान ली।

इसके बाद, एक दिन आधी रात को गुप्त मार्ग से होते हुए महाराज के शयन कक्ष में पहुँचे। राजा उस समय सो रहे थे, उन्होंने राजा की नाक पर धत्तों का रस डाला, जिससे राजा जाग न सकें। उन्होंने राजा को बग़ल के कक्ष में सुला दिया। फिर सुदर्शन ने राजा के कपड़े पहन लिये, उनके आभूषणों से अपने को सजाया और राजा के पलंग पर लेट गया। चारों दोस्त लौट आए।

महाराज के वेष में तैयार सुदर्शन सवेरे दरबार में गया और सिंहासन पर बैठ गया। अनुकरण में वह प्रतिभावान था। इसलिए उसपर किसी को संदेह नहीं हुआ। थोड़ी देर के बाद सैनिक धनिक व्यापारी कूर्मावतार तथा उसके घर में चोरी करते पकड़े गये शंकर को दरबार में ले आए।

राजा ने शंकर से पूछा, ''तुमने चोरी की?''

''हाँ, प्रभु'', शंकर ने अपने अपराध मानते हुए कहा।

''क्या जानते हो, चोरी करने के अपराध के लिए क्या दंड दिया जाता है?'' राजा ने पूछा।

''चोरी के मुताबिक जेल की सज़ा से लेकर हाथ काटने तक का दंड दिया जाता है'', शंकर ने कहा।

''यह जानते हुए भी तुमने चोरी क्यों की?'' राजा ने पूछा।

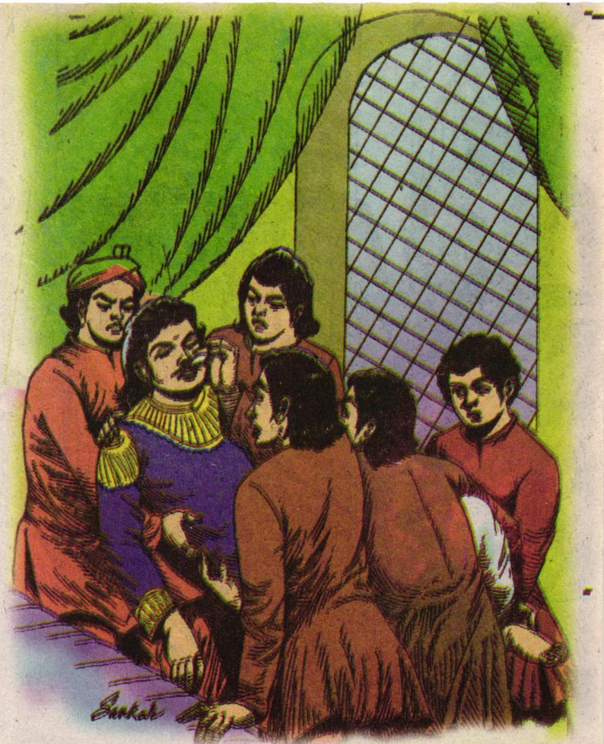

''एक हफ़्ते से लेकर मज़दूरी का काम नहीं मिला। बच्चों और पत्नी की भूख मुझसे देखी नहीं गयी, इसीलिए मैं चोरी करने पर तुल गया'', शंकर ने कहा।

''इसने चोरी ही नहीं की, बल्कि उसका कारण बताते हुए अपनी रक्षा करना चाहता है, इसलिए इसे कठोर दंड मिलना चाहिए'', कूर्मावतार ने राजा से विनती की।

''भूख की पीड़ा और पीड़ाओं से अधिक कष्ट-दायक है। शंकर से यह सहा नहीं गया और तुम्हारे घर में घुसकर उसने चोरी की। तुम्हारे पास अपार संपदा है, उसमें से शंकर ने चोरी की, सिर्फ़ सौ अशर्फियाँ।'' फिर उसने सिपाहियों को हुक्म दिया, ''कूर्मावतार को बाँध दो और इसे खूब पीटो।''

फिर कूर्मावतार से कहा, ''मेरी दृष्टि में तुम्हीं

अपराधी हो। शंकर को दो सौ अशर्फियाँ दो।'' राजा ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा।

मंत्री कुछ कहने के लिए उठने ही वाला था कि राजा ने हाथ उठाते हुए कहा, ''यह मेरा अंतिम फैसला हैं। उसे अमल में लाना ही आपका कर्तव्य है।''

इसके बाद अशर्फीलाल नामक ब्याज के व्यापारी और लच्छू नामक एक ग़रीब किसान को दरबार में सैनिक ले आए। लच्छू ने अशर्फीलाल से सौ अशर्फियाँ ब्याज पर कर्ज ली थीं। वह रक़म अब ब्याज सहित तीन सौ अशर्फियाँ हुई थीं। मिआद पूरी हो गयी, पर लच्छू ने वह रक़म नहीं लौटायी। यह उसपर लगाया गया अभियोग था।

पूरी जानकारी पाने के बाद राजा ने कहा, ''लच्छू ने पूरी रक़म नहीं लौटायी, इसका एक कारण यह भी है। रात-दिन वह मज़दूरी करता रहा, फिर भी उसकी स्थिति दयनीय है। पेट भर खाने और परिवार को खिलाने की उसमें शक्ति नहीं रही। पर ब्याज का व्यापार करके तुमने बहुत बड़ी संपदा कमायी। इसके लिए तुमने कोई मेहनत नहीं की। मेहनत करनेवालों को लूटने की विद्या तुम भली-भाँति जानते हो। तुरंत लच्छू के ऋण पत्र को फाड़ दो, नहीं तो तुम्हें जेल भेजूँगा'', राजा ने अशर्फीलाल से कहा।

इसके बाद सिपाही बसव नामक वैद्य और मँगा नामक विधवा को दरबार में ले आए।

पति की चिकित्सा करके उसे चंगा करने का आश्वासन देकर बसव ने मंगा से पाँच सौ अशर्फियाँ लीं। चिकित्सा करने में वह असफल हो गया और फलस्वरूप मंगा का पति मर गया। फिर भी बसव ज़ोर देता रहा कि जितनी रक़म देने का उसने वादा किया, उसे वह रक़म मिलनी ही चाहिए। न्यायस्थान में यही बताने के लिए उसने मंगा के विरुद्ध शिकायत पेश की।

''चिकित्सा करने का भरोसा देकर तुमने पहले ही मँगा से रक़म वसूल की। तुम उसकी चिकित्सा नहीं कर सके, पर अपनी रक़म वसूल करने पर डटे हुए हो। इससे बढ़कर अन्याय और क्या हो सकता है?'' राजा ने गंभीर स्वर में कहा।

''प्रभु, मैं ग़रीबों की चिकित्सा बिना शुल्क लिये करता हूँ। जो धनी हैं, उनसे औषधि तैयार करने के लिए ही सही, रक़म लेना ज़रूरी है न?'' वैद्य बसव ने कहा।

''तुम्हारी बात में सच्चाई नहीं है। अपने पति की चिकित्सा के लिए मँगा ने जो पाँच सौ अशर्फ़ियाँ तुम्हें दीं, उन्हें उसे वापस लौटा दो। अन्यथा तुम्हें जेल की सज़ा भुगतनी पड़ेगी'', राजा ने अपना फैसला सुनाया।

उस दिन का कार्यक्रम पूरा हो गया। अंतःपुर में लौटा सुदर्शन इस बात पर बेहद खुश हुआ कि आख़िर उसकी इच्छा यों पूरी हो गयी। राजा की पोशाक उतार दी और जिस सुरंग मार्ग से वह आया था, उसी मार्ग से होते हुए बाहर आ गया और अपने मित्रों से मिला।

दूसरे दिन सवेरे राजा राजशेखर की आँखें खुलीं। उसकी समझ में आ नहीं रहा था कि आख़िर हुआ क्या है? दिन भर वह सोता क्यों रह गया। मंत्री से मिलने के बाद उन्हें यह मालूम हो गया कि किसी ने उसकी नक़ल उतारी और सिंहासन पर आसीन होकर न्याय निर्णय किया। वह क्रोधित हो उठा।

उसने निर्णय कर लिया कि उस दुष्ट को पकड़ के रहूँगा और उसका सिर काट दूँगा। मंत्री को कहा कि यह विषय पोशीदा रखा जाए।

दूसरे दिन ही राजा और मंत्री नक़ली राजा को पहचानने और उसे पकड़ने के काम में लग गये। वे बहुरूपिया बनकर उसे ढूँढ़ने लगे। रास्ते में गाँव के प्रमुख इसी विषय पर चर्चा कर रहे थे कि राजा का फैसला कितना प्रशंसनीय है। राजा में इतना बड़ा परिवर्तन हुआ, इसपर उन्हें आनंद हो रहा था। उन्हें वे स्त्रियाँ भी दिखायी पड़ीं, जो

ग्रामदेवी से प्रार्थना कर रही थीं कि राजा कुशल रहें और उनका स्वभाव ऐसा ही बना रहे।

दो दिनों के बाद जंगल में वे पाँच दोस्त दिखायी पड़े, जो आपस में बातें कर रहे थे। उनमें से एक युवक राजा की ही तरह बैठा हुआ था और फैसले सुना रहा था। अब राजा जान गया कि इनमें से किसने राजा की भूमिका निभाई। राजा ध्यान-पूर्वक उसे देखते रहे और मुस्कुरा पड़े। उन्हें लगा कि ऐसे व्यक्ति का अभिनंदन करना चाहिए न कि उसे दंड दिया जाना चाहिए। चुपचाप राजा वहाँ से खिसक गए।

वेताल ने यह कहानी सुनायी और कहा, ''राजन्, बकरियों को चरानेवाला अनाम का एक चरवाहा राजा के शयन कक्ष में पहुँचा, उसका वेष धारण किया, उसके सिंहासन पर बैठकर न्याय निर्णय

किए, क्या ये सब दंडनीय कार्य नहीं?

"राजा को चाहिए था कि वह उस बदमाश को कठोर से कठोर दंड दे। यह सब होते हुए भी, उस व्यक्ति को पहचानने के बादे भी उसे दंड न देना क्या राजा की कमज़ोरी नहीं? मैं तो कहूँगा कि वह राजा कहलाने के लायक़ भी नहीं। राजा में अकस्मात जो परिवर्तन हुआ, इसका क्या कारण हो सकता है? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।"

विक्रमार्क ने कहा, "सुदर्शन की यह बड़ी ही इच्छा थी कि एक दिन के लिए ही सही, राजा बनूँ। वह मौका उसे अचानक मिल गया, इसलिए इसके परिणामों की परवाह किये बिना उसने राजा बनकर अपने न्याय निर्णय सुनाए। यह निस्संदेह उसका दुस्साहस ही कहा जा सकता है। किन्तु राज्याधिकार प्राप्त करने की उसमें कोई इच्छा ही नहीं थी। उसने एक दिन में जो निर्णय लिये, वे सही हैं, न्यायपूर्वक हैं। वे कदापि धर्मविरुद्ध नहीं हैं। जो भी उसने फैसले सुनाए, वे प्रजा के क्षेम के ही पक्ष में हैं। उन्हें सताने का उसका उद्देश्य ही नहीं था। हम यह नहीं कह सकते कि परंपराओं से जो निर्णय धर्मसम्मत माने जा रहे हैं, वे अवश्य ही अमल में लाए जाएँ। इन धर्मबद्ध नियमों को अमल में लाने से अपराध कम हो जाएँगे, यह कहा नहीं जा सकता। काल के अनुसार शासनों के नियमों में परिवर्तन लाना राजा का बड़ा कर्तव्य है। बहुरूपिया बनकर जब राजा दोषी को पकड़ने गये, तभी महाराज को यह वास्तविकता मालूम हुई । तभी उन्हें मालूम हो आया कि अपराध क्यों कम नहीं हो रहे हैं। प्रजा की बातों ने उनकी आँखें खोल दीं। यद्यपि सुदर्शन ने अपराध किया, पर उसने राजा की नीति को बदलने में उसकी मदद पहुँचायी। वह यह भी जान गया कि इसके पीछे सुदर्शन की कोई साजिश नहीं है। इसीलिए उसे माफ़ कर दिया। राजशेखर केवल निरंकुश राजा ही नहीं, बल्कि प्रजा की क्षेम चाहनेवाला राजा भी है।"

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया, और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः रश्मि की रचना)

नारी बनी मत्स्य कन्या

नाड्या वैसी का जन्म आम सामान्य लोगों की भाँति हुआ था। उसकी टाँगें भी थीं। लेकिन जब वह १६ साल की हुई तो उन्हें काटना पड़ा क्योंकि उनका सही रूप से विकास नहीं हुआ था।

जब वह पचास की हुई तो एक लड़के ने उसकी कृत्रिम टाँगों की ओर देखा और उसके बारे में पूछा। उस वक्त नाड्या ने कहा कि वह मत्स्यकन्या है। उसकी बात सुन वह छोटा लड़का कुतूहलवश दौड़ता हुआ झटपट पिता को बताने गया।

इस घटना से एक नया विचार कौंधा। नाड्या ने ऑस्कर विजेता, "वैटा वर्कशॉप" को लिखा कि उसकी एक पूँछ बना दें। वे तैयार हो गए और सांचा तैयार कर प्लास्टिक की पूँछ तैयार कर दी। पूँछ के बन जाने पर नाड्या इतनी प्रसन्न है कि पूछो नहीं। उसका कहना है कि मैं 'ट्रेथलॉन' तैराकी रेस में भाग लूँगी।

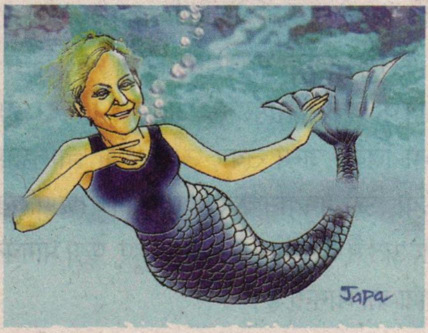

वैश्विक ताप को कम करते शीशे

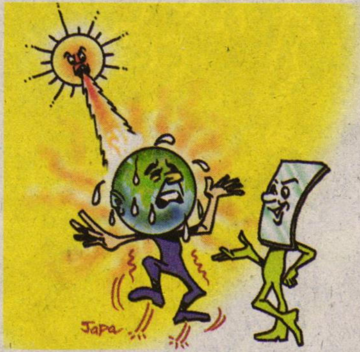

एरिजोना विश्वविद्यालय के ज्योतिषी डॉ रोजर ऐंगल का यह मानना है कि उन्होंने वैश्विक ताप (ग्लोबल वार्मिंग) की समस्या का समाधान ढूँढ लिया है।

उनके अनुसार पृथ्वी की सतह से एक लाख करोड़ मील की ऊँचाई पर एक बड़े तोप से जिसका बेरल ०.६ मील का हो, एक पिस्तौल चलानी होगी जिससे सहस्त्रों की संख्या में शीशे विकिर्णीत हो जाएँगे। परंपरागत पिस्तौल की अपेक्षा इसकी शक्ति सौ गुणा ज़्यादा होगी एवं चलाने से पहले इसको कई सौ मील की जगह पर स्थापित करना होगा। उनका यह मानना है कि पृथ्वी के लिए ये सूर्य की किरणों से बचने के लिए एक ढाल की तरह होगा।

क्योंकि सूर्य की किरणें, विकिर्णीत अपनी दिशा बदल लेंगी। डॉ रोजर को पता है कि इस प्रयोग के मार्ग में कई मुश्किलें हैं - क्योंकि इसकी लागत $३५० ट्रिलियन के करीब है - फिर भी उनको विश्वास है कि वे इस परियोजना को शुरू कर पाएँगे।

भरत

पौराणिक युवा नायक - १२

धर्मप्रभु सम्राट भरत ने भारत पर शासन किया, इसीलिए इस देश का नाम पड़ा भारत। किन्तु हमारे इतिहास में भरत नाम के कितने ही प्रसिद्ध व्यक्ति-विशेषों के नाम देखने को मिलते हैं। उनमें से बहुत ही सुप्रसिद्ध तीन व्यक्तियों के बारे में हम यहाँ चर्चा करेंगे।

ऋषभ-जयंतिकला का पुत्र भरत महान दयालु था। उन्होंने अंजनाम नामक राज्य का शासन-भार दीर्घ काल तक संभाला। अपने अंतिम जीवन काल में राज्य का भार पुत्रों को समर्पित किया और तपस्या करने वन में चले गए।

एक बार जब वे नदी में स्नान कर रहे थे, तब उन्होंने देखा कि एक गर्भिणी हरिणी नदी का पानी पी रही है। तब उस समय अकस्मात काले-काले बादल घिर आये और अंधेरा बढ़ता गया। भयंकर मेघ गर्जन से भयभीत होकर उस गर्भिणी हरिणी ने वहीं शिशु को प्रसव दिया और मर गयी।

वृद्ध भरत को उस हरिणी की अनाथ हरिणी संतान पर दया आयी। वे उसे आश्रम में ले आए और उसका पालन-पोषण करने लगे। क्रमशः उस पर उनमें ममता बढ़ती गयी। मौत के समय पर भी उन्हें उसी की याद आने लगी। कहा जाता है कि अगले जन्म में वे हरिणी बनकर जन्मे।

इसके बाद भी भवबंधनों को तोड़कर, जन्म-मरण के चक्र से बाहर नहीं आ पाए और दो और जन्म लिये। जन्म लेकर उन्होंने जो ज्ञान प्राप्त किया, उसे भगवान की कृपा से आचरण में रखा और अंत में जन्म बंधन से विमुक्त हुए, ऐसा भागवत पुराण का मानना है।

आदर्शपूर्ण भाई-भाई के बीच की एकता के उज्ज्वल उदाहरण बनकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी तक सुप्रसिद्ध रहे, सम्राट दशरथ के तीसरे पुत्र भरत, जिनके बारे में हर कोई जानता है।

उनके हस्तक्षेप के बिना ही इनकी माता कैकेयी ने अपने पति दशरथ से तीन वर माँगे। तदनुसार अग्रज राम को वन जाना पड़ा। अपने प्रिय पिता की मृत्यु को देखकर भरत हिल उठे। अग्रज को ढूँढ़ते हुए वे वन गए और अग्रज राम से सविनय विनती की कि वे अयोध्या लौटें; सिंहासन पर आसीन हों और राज्य-भार संभालें। अग्रज श्रीराम पिताश्री को दिये वचन से टलनेवालों में से नहीं थे। तब भरत ने उनके खड़ाऊँ अपने साथ ले लिए और उन्हें सिंहासन पर रखकर उनका राज्याभिषेक किया। नंदिग्राम में रहकर उन्होंने अग्रज के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए चौदह साल बिताए। अग्रज के लौटते ही उन्हें राज्य सौंपा। भरत ऐसे त्यागी व धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे।

भरत के नाम से सुप्रसिद्ध बाल वीर कुमार शकुंतला-दुष्यंत का पुत्र था। उसका जन्म ही नहीं बल्कि उसकी माता शकुंतला का जन्म, परिणय आदि भी विचित्रताओं से भरे हैं।

राजर्षि विश्वामित्र की कठोर तपस्या को भंग करने देवेंद्र ने मेनका नामक अप्सरा को भेज़ा। मेनका ने अपने सौंदर्य से, नृत्य गीतों से विश्वामित्र को मुग्ध किया। जैसे ही पुत्री जन्मी मेनका इंद्रलोक लौटी। तब जाकर विश्वामित्र को इस घटना की असलियत का पता चला। उन्होंने बच्ची को वहीं छोड़ दिया और तपस्या करने किसी और स्थान पर चले गए।

सूखे पत्तों के बीच पड़ी हुई बच्ची के चारों ओर शकुंत पक्षी जमा हो गए और उसकी परिचर्याएँ करने लगे। कण्व मुनि ने यह दृश्य देखा और उस बच्ची को अपने आश्रम में ले आए। उसका नाम रखा शकुंतला और अपनी पुत्री की तरह बड़े ही प्यार से उसका पालन-पोषण करने लगे।

यौवन में शकुंतला ने क़दम रखा। एक दिन वह अपनी सहेलियों के साथ पौधों को जब पानी दे रही थी, तब शिकार करने आए राजा दुष्यंत ने उसे देखा। वे शकुंतला के सहज सौंदर्य पर मुग्ध हुए। उन्हें लगा कि यह उनके पूर्व जन्म का सुफल है। शकुंतला भी दुष्यंत के प्रति आकर्षित हुई। दोनों ने गंधर्व विवाह किया। दुष्यंत ने अपनी

अंगूठी भेंट के रूप में उसे दी और जल्दी ही लौटने का आश्वासन देकर राज्य लौट गए।

शकुंतला एक बार दुष्यंत के बारे में सोचती हुई लीन हो गयी। तब वहाँ दुर्वासा मुनि आये, पर शकुंतला ने उसपर ध्यान नहीं दिया। इसपर उन्होंने क्रोधित होकर उसे शाप देते हुए कहा, ''जिसके बारे में सोचती हुई तुमने मेरा अपमान किया, वह व्यक्ति तुम्हें भूल जाएगा।''

शकुंतला ने यह शाप तो नहीं सुना, पर उसकी सहेलियों ने यह शाप सुन लिया और शाप विमोचन का उपाय बताने की अभ्यर्थना मुनि से करने लगीं।

यह सब जब गुज़र रहा था, तब मुनि कण्व तीर्थ यात्रा पर गए हुए थे। लौटने के बाद जब उन्हें यह सब मालूम हुआ तब उन्हें लगा कि यह सब दैव संकल्प है। एक दिन गर्भवती शकुंतला से उन्होंने कहा, ''मोह के आवेश में आकर तुमने यह काम किया, पर यह तो अच्छा ही हुआ कि दुष्यंत जैसे योग्य राजा की पत्नी बनी हो।'' उसे पति के पास भेजने की तैयारियाँ करने लगे।

उसे विदा करते समय कण्व ऋषि ने कहा, ''बड़ों का आदर करो, संतान की देखभाल प्रेम-पूर्वक करती रहो, एक उत्तम गृहिणी बनकर जीवन को सार्थक करो।'' उसे भेजते हुए उनकी आँखों में आँसू उमड़ आए। सहेलियों और शिष्यों को भी उसके साथ भेजा?

जब शकुंतला राजधानी पहुँची और दुष्यंत को देखने गयी तब दुष्यंत ने उसे पहचानने से साफ़-साफ़ इनकार किया। उसकी दी हुई अंगूठी को वह दिखाना चाहती थी, पर वह नदी में यात्रा

करते समय उँगली से फिसल गयी। निस्सहाय शकुंतला की परिस्थितियाँ देखते हुए उसकी माँ मेनका उसे अदिति मारीच प्रजापति के आश्रम में ले आयी और उसकी सुरक्षा का प्रबंध किया। ऐसे ही कुछ समय बीत गया। समय के साथ शकुंतला ने बेटे को जन्म दिया।

नदी में जो अंगूठी गिर गयी थी, उसे एक मछली ने निगल डाला। आख़िर मछुआरों के द्वारा वह अंगूठी दुष्यंत के पास आयी। उसे देखते ही दुष्यंत को शकुंतला की याद आ गई। उस क्षण से उससे मिलने के लिए वह तड़पने लगे।

कुछ दिनों के बाद जब दैव दानवों के बीच युद्ध छिड़ा, तब दुष्यंत ने देवताओं की सहायता की। जब वह युद्ध से लौट रहे थे तब उसने मारीच प्रजापति के आश्रम के पास एक बालक को देखा, जो सिंहों के साथ खेल रहा था। वह उस पर मुग्ध हो गए।

वह इस बात को सोच-सोचकर आश्चर्य करते रहे कि बालक को जन्म देनेवाली माँ कौन होगी? इतने में शकुंतला वहाँ आयी। दुष्यंत ने उसे पहचाना और मुस्कुराये। जब उन्हें मालूम हुआ कि पहले उसे न पहचानने का कारण क्या है, तो उन्हें पश्चाताप हुआ। कारण जानकर शकुंतला का क्रोध ठंडा हो गया। उसने दुष्यंत को बताया कि वह उन्हीं का पुत्र है। दुष्यंत के आनंद की सीमा न रही।

इसके बाद, पुण्य दंपति अदिति-मारीच के आशीर्वाद पाकर बालक सहित राजधानी पहुँचे। पुत्र का नाम रखा भरत। उम्र के साथ-साथ उसने समस्त विद्याएँ सीखीं और उसके बालिग होने के बाद उसका राज्याभिषेक किया गया। भरत आर्यावर्त का महान प्रतापी चक्रवर्ती सम्राट हुआ। उसकी कीर्ति सारे भूमण्डल पर फैल गई।

भरत ने प्रजा क्षेम को ही अपना यज्ञ माना, जीवन की तपस्या मानी और प्रजारंजक शासन चलाया। इसलिए उसे पुराण, सिर्फ वीरकुमार के रूप में ही नहीं मानते बल्कि भरत वर्ष, भरत खंड कहते हुए हमारे देश का नाम उसके नाम पर ही स्थिर हुआ, जिसकी कीर्ति व दीप्ति चारों ओर आज भी फैल रही है।

आप के पन्ने

विज्ञान तुम्हारे लिए

जेम्स प्रेसकॉट जूल

जूल एक ऐसी इकाई है जिसके द्वारा समस्त प्रकार की ऊर्जा मापी जाती है। वॉट और ओम की तरह इस इकाई का नाम भी एक महान भौतिकशास्त्री के नाम से पड़ा।

जेम्स प्रेस्कॉट जूल का जन्म इंग्लैंड में मैनस्टर के निकट, सॉलफोर्ड में सन् १८१८ को हुआ। जूल अपने पिता के शराब बनाने का व्यवसाय करते थे किन्तु विज्ञान में उनकी गंभीर रुचि थी। उन्होंने दावा किया था कि वे फेरेनहाइट डिग्री की १/२०० भाग तक का ताप सटीकता से नाप सकते हैं। (उस समय सेल्शियस स्केल से ज़्यादा लोकप्रिय फेरेनहाइट स्केल था।) लेकिन उनके समकालीन लोगों ने जूल के इस दावे पर विश्वास नहीं किया। उस समय लोगों का मानना था कि ताप एक प्रकार का द्रव है अर्थात् 'केलोरिक'। लेकिन जूल ने इस तथ्य को मानने से इंकार कर दिया और इस सिद्धांत को स्थापित करने की कोशिश की जिसमें उनका कहना था कि ताप भी एक प्रकार की ऊर्जा है एवं किसी भी व्यवस्था (सिस्टम) में समस्त ऊर्जाओं का कुलांक हमेशा एक रहता है।

तुम्हारा परिवेश

रंगबिरंगा जीवन

आपको पता होगा कि छुप्पन छुपाई बहुत पुराना खेल है किन्तु इसे सिर्फ मनुष्य ही अकेले नहीं खेलते। छोटी मछलियाँ, छुप्पन छुपाई के तरीकों का प्रयोग करके, अपनी जान बड़ी मछलियों से बचाती हैं जबकि तितलियाँ और फतिगें, पक्षियों एवं दूसरे शत्रुओं के आक्रमण से बचती हैं। कुछ जीवों के रंग ऐसे होते हैं कि वे अपने आसपास के रंगों के साथ घुल जाते हैं और शत्रु उन्हें पहचान नहीं पाता। जैसे कि तितलियों के पंख टेढ़ी दाँत वाले जियोमीटर जैसा लगता है, और पत्तियों के एहसास दिलाते हैं। इस तरह तितली पेड़ों की पत्ती बन छुप जाती है और कोई उसे पहचान नहीं पाता।

रंगों में बदलाव का प्रयोग, बचाव एवं आक्रमण दोनों के लिए किया जाता है। गिरगिट बचाव के लिए अपना रंग बदलता है किन्तु अफ्रीकी शेर शिकार पकड़ने के लिए रंग बदलते हैं। घास फूस और झाड़ियों में ये शेर ऐसे घुल-मिल जाते हैं कि पता ही नहीं चलता और बिचारा जानवर बिना किसी शंका के, आसानी से उनका शिकार बन जाता है।

मैन ऑफ द मिस्मैच

क्या तुम इन प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ियों के चेहरे पहचानते हो? चेहरे की बनावट (पृष्ठ ४० पर), आँखें, नाक और ओठों के चित्रों से पता लगाओ वह कौन है? फिर, उनकी बनावट के अनुसार उनको काट कर एक सादे कागज पर चिपका कर उनकी आकृति पूरी करो और अपने मैन ऑफ द मिस्मैच की प्रविष्टि हमें भेज दो। जो सबसे ज़्यादा रचनात्मक और सही होगा उसे ५००/- का नकद इनाम और एक ''हनुमान सोनि प्लेस्टेशन २'' की टी-शर्ट भी दिया जाएगा। आप ऑनलाइन **www.chandamama.com/cricket** पर भी खेल सकते हैं और अपनी प्रविष्टि का एक प्रिण्ट आउट ३१ मई २००९ तक हमें भेज दें।

प्रविष्टि भेजने का पता : चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड, २/५१३ (पुराना नं. ३/३९६), संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेईन रोड़, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

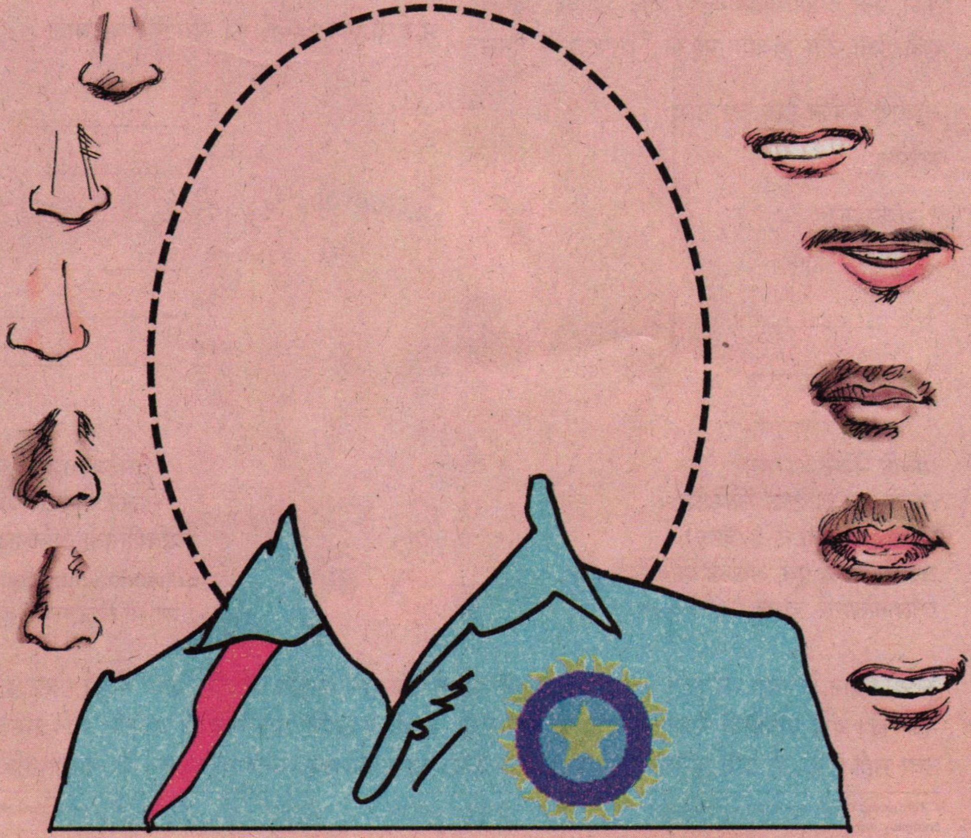

सम्मर स्पेशल

चन्दामामा का क्रिकेट क्रिस्टल बॉल

सीधा प्रसारण ! दक्षिण अफ्रीका से ! *चन्दामामा* के साथ आई.पी.एल. के जोश में आओ।

चन्दामामा का क्रिकेट क्रिस्टल बॉल प्रतियोगिता* खेलो। क्या राजस्थान रॉयल्स अपने कीर्तिमान की रक्षा कर सकेंगे? कल्पना करो... खेल [illegible] है! ऐसा मौका बड़ी मुश्किल से मिलता है। ऐसे मौके का भरपूर फायदा उठाओ।

अपनी 'स्वप्न टीम' बनाओ और अंदाजा लगाओ। **अपनी सूची १५ मई २००९** या उससे पहले भेजो। अच्छी तरह सभी खेल देखो और निश्चय करो कि कौन अंदर है और कौन बाहर? यदि आपका अंदाजा सही हुआ और चन्दामामा के विशेषज्ञों के पैनल द्वारा बनाई टीम के साथ तुम्हारी स्वप्न टीम का मेल बैठा, तो पाँच विजेताओं** को **लेपटॉप** दिया जाएगा। तो देरी किस बात की? खेलना शुरू करो!

फाइनल मैच खेला जाएगा किन दो टीमों में:

सबसे ज्यादा छक्के कौन मारेगा :

इस वर्ष किस पर प्रतिबन्ध लगाया जायेगा?:

इस वर्ष कौन रोयेगा?:

ज्यादा से ज्यादा रन किसका गेंदबाज देगा?:

आई.पी.एल.२००९ का सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज :

आई.पी.एल.२००९ का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज :

तुम्हारी स्वप्न टीम का नाम :

सदस्य:

१. (कप्तान)
२. (विकेट कीपर)
३. ____________
४. ____________
५. ____________
६. ____________
७. ____________
८. ____________
९. ____________
१०. ____________
११. ____________

प्रविष्टि भेजने का पता :
चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड,
२/५१३ (पुराना नं. ३/३९६),
संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेईन रोड़,
चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

तुम चन्दामामा का क्रिकेट क्रिस्टल बॉल प्रतियोगिता ऑनलाइन www.chandamama.com/cricket पर भी खेल सकते हो।

कृपया ध्यान दें प्रवेश स्वीकृति केवल उन्हीं को दी जाएगी जिन्होंने उपर्युक्त निर्धारित फार्म भरकर पोस्ट द्वारा भेजा हो। यदि प्रविष्टियाँ निर्धारित प्रपत्र पर नहीं भेजी गईं तो वे अपने आप रद्द हो जाएँगी। यदि समस्त उत्तर सही न हों तो उसी प्रतियोगी को मेगा इनाम दिया जाएगा जिसका उत्तर सही उत्तरों के निकटतम हो।

* Terms and Conditions apply. Employees and family members/ relatives of employees of Chandamama or other companies belonging to the parent company are not permitted to participate in the contest. Entries from such parties will not be entertained and will be disqualified.
** The prizes are offered across 13 editions of *Chandamama*.

चित्रकथा को पूरा करो

गौर करें, रंगीन आकर्षक क्रिकेट के विवादास्पद विषय की प्रविष्टि ई-मेल द्वारा contests@chandamama.com पर भेज सकते हो।

सर्वोत्तम प्रविष्टि को रु. ५००/- का नकद इनाम दिया जाएगा।

प्रविष्टि भेजने का पता : चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड, २/५१३ (पुराना नं. ३/३९६), संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेईन रोड़, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

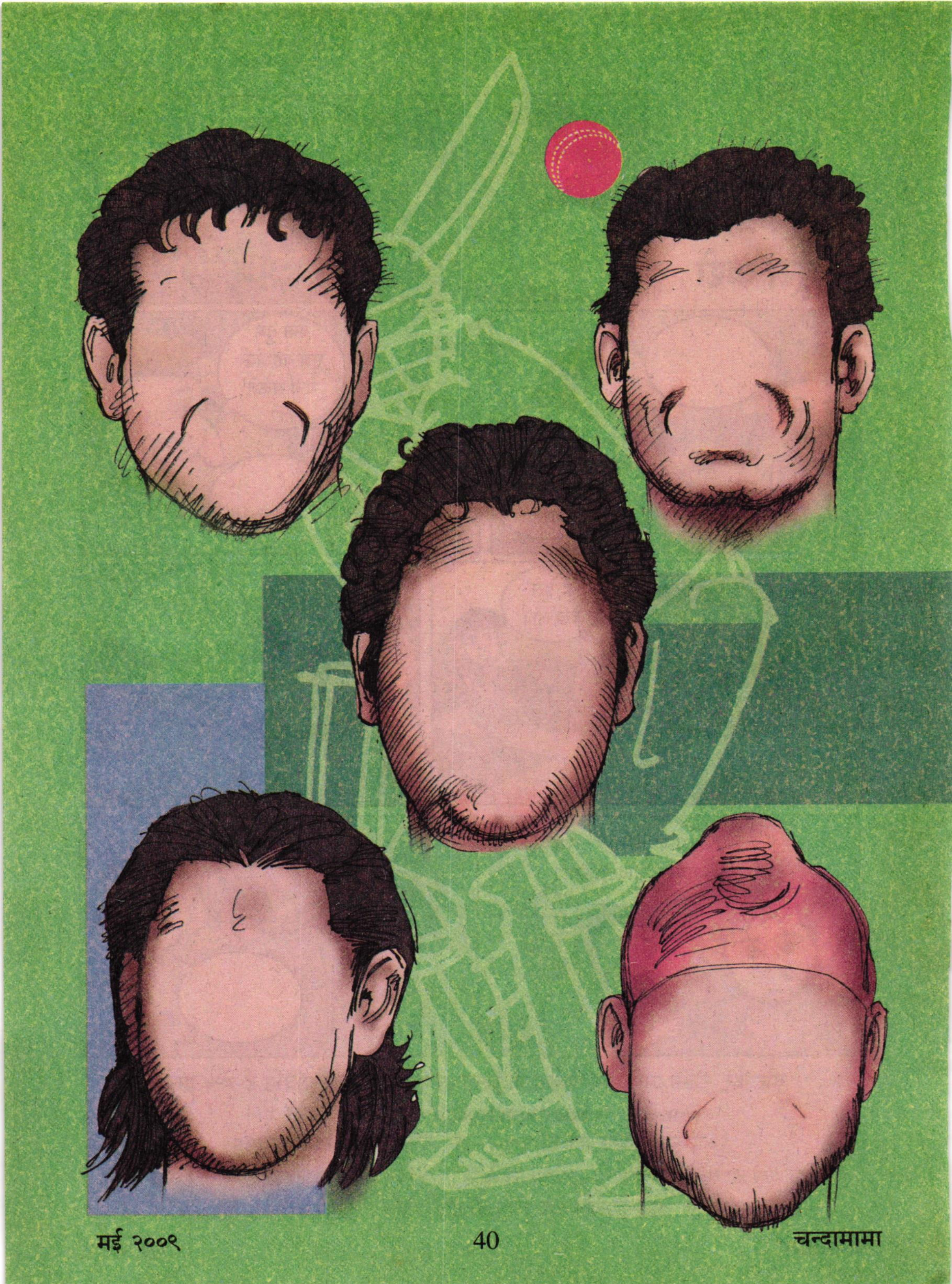

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें क्या करना चाहिये:

१. एक कागज पर उत्तरों को लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर ३१ मई तक हमें मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर जुलाई २००९ के अंक में प्रकाशित होंगे।

दुनिया की घटनाएँ/व्यक्तित्व

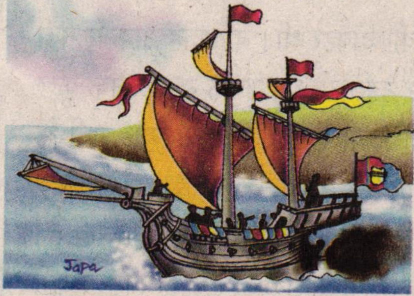

१. सबसे पहले किसने नौसेना संस्थान की स्थापना सागरेस में की?

२. पाडु में सर्जरी के एक प्रोफेसर जो आधुनिक शरीर विज्ञान के जनक माने जाते हैं, वह कौन थे?

३. वह आंशिक अंधे थे जब उन्होंने दो काव्यशास्त्र की पुस्तकें लिखीं। जिनको ख्याति मिली। वे कौन थे? उनके काव्य शास्त्रीय पुस्तकों का नाम क्या था?

४. एक महामारी जिसने हजारों यूरोपवासियों की जान ले ली। उसका अंत कर दिया गया जब एक आग लग गई। वह क्या था? यह कब हुआ?

५. छपाई के आविष्कार का श्रेय किसको दिया जाता है? नई तकनीक का प्रयोग कर कौन-सी पुस्तक का प्रकाशन किया गया है?

गर्माहट का स्रोत दूरी

सर्दियों की दोपहर थी। बादशाह अकबर नदी के किनारे टहल रहे थे। उनके साथ उनके कुछ दरबारी तथा बीरबल भी थे। बादशाह नदी के बहते हुए पानी की ओर देखते रहे।

''यह हवा पानी को ठंडा किए जा रही है। पर्वतों की ठंडक लाती है और पानी में मिला देती है।'' बादशाह ने कहा।

''कौन इस कड़कती ठंड में नदी में उतरेगा?'' एक दरबारी ने कहा।

''यदि सही इनाम दिया जाए तो हम एक ऐसे आदमी को ढूँढेंगे जो सारी रात नदी में, छाती तक गहरे पानी में खड़ा रहे।'' बीरबल ने कहा।

''असंभव, जो भी ऐसा करेगा वह ठंड से जकड़ कर मर जाएगा।'' बादशाह ने कहा।

''शहंशाह, असंभव क्या होता है जिसका प्रयास न किया गया हो।'' बीरबल अपनी बात पर अड़ा रहा। ''तुम कैसे दृढ़ता से कह सकते हो?'' बादशाह ने चुनौती देते हुए कहा।

''प्रस्ताव रखकर देखें कि मैं सही हूँ या गलत।'' बीरबल ने धीमे स्वर में कहा।

दूसरे दिन नगाड़े बजाने वाले नगाड़े बजाते हुए चारों तरफ गए और राजा के आदेश की घोषणा की। ''जो ठंड में सारी रात यमुना नदी में छाती तक गहरे पानी में खड़ा होकर दिखाएगा उसे सौ मोहरें इनाम में दी जाएंगी।''

एक धोबी ने यह घोषणा सुनी। उसे पैसों की बहुत जरूरत थी। ''एक सौ मुहरें! उनसे मैं अपने सारे कर्ज उतार लूँगा और मेरे पास भी थोड़ा बच जाएगा।'' उसने अपनी पत्नी से कहा।

''तुम ठंड में जकड़ मृत्यु को भी प्राप्त हो सकते हो।'' पत्नी ने सावधान करते हुए कहा।

''नहीं, मैं नहीं मरूँगा। मैं बचपन में सर्दियों में रात को नदी में तैरा करता था।''

उसने अपनी पत्नी की हथेली को बड़े प्यार से दबाकर आश्वासन दिया। ''सोचो एक सौ मोहरें।'' वह हँसा।

दूसरे दिन वह राजदरबार में उपस्थित हुआ। और दरबार के कर्मचारी से कहा कि वह घोषणा सुनकर उपस्थित हुआ है। कर्मचारी उसे बादशाह

के समक्ष ले गया। धोबी ने झुककर धरती को छूकर अदब से सलाम किया, और बादशाह को कहा, "शहंशाह, मैंने राज दरबार की घोषणा सुनी है। मैं पूरी रात नदी में छाती तक गहरे पानी में खड़ा रहने के लिए तयार हूँ।" उसने स्पष्ट स्वर में कहा।

"बहुत खूब", बादशाह ने दरबारी कर्मचारी से कहा, "आवश्यकता अनुसार सारी तैयारी कर दी जाए। दो पहरेदारों की नियुक्ति कर दी जाए जो नदी तट पर रहेंगे और उस पर पूरी नज़र रखेंगे।" पहरेदारों को यह तैनाती अच्छी नहीं लगी क्योंकि वे ठंड के इस मौसम में बाहर रहना नहीं चाहते थे। परंतु उनके पास कोई चारा न था। आदेश तो आदेश होता है।

अंधेरा होते ही पहरेदारों ने धोबी को पानी में उतरने का संकेत दिया। उन्होंने स्वयं कई स्वेटर एक के ऊपर एक पहन रखे थे। उन्होंने अपनी तैनाती छप्पर के नीचे ले ली।

धोबी ने अपने कपड़े उतारे। उसका शरीर ऐसे कांपा जैसे तूफान में पत्ता कांपता है। थोड़ी देर के लिए उसने सोचा कि वह अपनी जान को जोखिम में डाल रहा है। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। "सौ मोहरें!" उसने अपने आप से कहा।

"एक रात का दुख और सौ मोहरें !" यह विचार आते ही उसे बल मिला। वह पानी में चलता रहा जब तक उसे छाती की गहराई तक पानी नहीं मिला।

चौकसी प्रारंभ हुई। यह चाँदनी रात थी। करोड़ों तारे आकाश में चमक रहे थे। तारों के बीच हंसिए-सा चाँद चमक रहा था। कड़कती ठंड देह को चीर रही थी। ज्यों-ज्यों रात बढ़ती गई त्यों-त्यों असहनीय ठंड होती गई। धोबी को ऐसा लगा कि रात का अंत ही नहीं हो रहा है।

"ओह! बस सुबह हो जाए!" वह बार-बार यही इच्छा करता रहा।

उसने महसूस किया कि यह इच्छा उसे कहीं का नहीं रहने देगी। इस अग्नि परीक्षा का सामना करने के लिए उसे कोई न कोई रास्ता निकालना होगा जो उसे शक्ति दे सके। उसे अपने मस्तिष्क को कहीं न कहीं लगाना होगा। उसकी नज़र दूर रखी लैंप की लौ पर पड़ी। यह लैंप महल के ऊपर छत पर लगी थी। "आह!" इतनी दूर से भी मानो सचमुच उसे थोड़ी गर्माहट महसूस हुई। लैंप और गर्माहट ने उसके डर को दूर किया और प्रेरणा

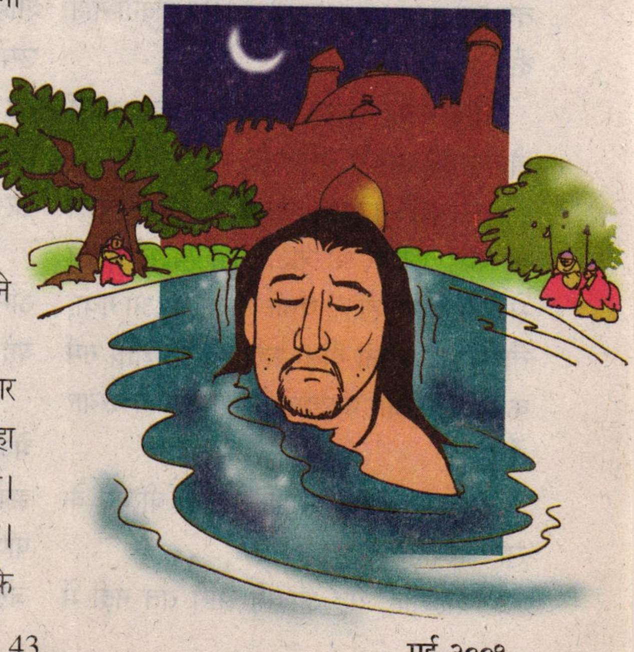

दी। वह भूल गया कि पानी कितना ठंडा है। उसे कड़कती ठंड का एहसास तब तक नहीं हुआ जब तक मुर्गे ने बाँग देकर सुबह होने की सूचना नहीं दी।

धोबी ने यह महसूस किया कि अंधकार खत्म हो गया है। उसकी अग्नि परीक्षा खत्म हुई।

नदी के किनारे खड़े पहरेदारों ने जोर से चिल्ला कर कहा, ''बाहर आ जाओ, तुम एक सौ मोहरों से धनी हो गए हो।'' धोबी किनारे पर आ गया, तौलिये से अपना गीला शरीर पोंछा, शीघ्र गर्म कपड़े पहने और पहरेदारों के साथ शाही दरबार में गया।

बादशाह अपने दरबारियों तथा बीरबल के साथ दरबार में आए।

''शहंशाह, यह आदमी सारी रात नदी में छाती तक गहरे पानी में खड़ा रहा।'' उन्होंने घोषणा की।

बादशाह को विश्वास न हुआ। उन्होंने सोचा जरूर इसने कोई चाल चली होगी जिससे ठंड को दूर रखा जा सके। वे आगे की ओर झुके और अपनी गरजती आवाज में बोले, ''मुझे बताओ कि तुमने ठंड को कैसे दूर रखा?''

''शहंशाह, महल की छत पर लगी लैंप की लौ ने मुझे गर्मी दी।'' धोबी ने भोले-भाले अंदाज में कहा। ''आह ! लैंप ने तुम्हें गर्माहट दी, देखा जाए तो, तुमने बाहर से मदद ली। यह व्यवहार तुम्हें इनाम लेने का हकदार नहीं बनाता।''

धोबी का चेहरा मुरझा गया। और बीरबल का भी लेकिन बीरबल ने कुछ नहीं कहा। वह बड़े दुख के साथ देखता रहा। धोबी सर नीचा कर शाही महल से बाहर आ गया। बीरबल ने देखा उस आदमी का चेहरा निराशा में डूब गया। उसे ठंड सहनी पड़ी इस आशा से कि उसे इनाम मिलेगा। क्रूर विधि ने उसकी आशाओं पर पानी फेर दिया।

बीरबल ने महसूस किया कि धोबी के साथ अन्याय हुआ है। उसने उसी समय प्रतिज्ञा की, वह उसे उसका हक दिलाकर रहेगा।

दूसरे दिन, बीरबल ने शाही दरबार को संदेश भेजा, यह कहकर कि घर में कोई जरूरी काम है, इसलिए आज वह दरबार में उपस्थित नहीं हो पाएगा। ''जरूरी काम! बादशाह की सेवा से बढ़कर जरूरी काम क्या हो सकता है?'' बादशाह अकबर

बड़बड़ाया। कुछेक दरबारी, जो बीरबल से ईर्ष्या करते थे, बड़े खुश हुए।

''उसी समय, बादशाह ने बीरबल को बुलाने के लिए पहरेदार भेजा। पहरेदार दौड़ता हुआ बीरबल के घर आया और उसने बादशाह का संदेश दिया।

''आह!'' बीरबल ने कहा। ''जाओ और बादशाह से कहो कि मैं खिचड़ी बनाने में व्यस्त हूँ। जैसे ही यह बन जाती है, मैं उनकी सेवा में हाजिर हो जाऊँगा।'' पहरेदार ने खबर बादशाह अकबर को पहुँचा दी।

''बड़ा मूर्ख है!'' बादशाह ने गुस्से में जोर से कहा। फिर उन्हें मन-ही-मन थोड़ी बेचैनी हुई।

''वह आदमी जरूर कोई शरारत कर रहा है। चलो, उसे पकड़ा जाए,'' बादशाह ने भौंहें सिकोड़ कर कहा।

बादशाह शाही घोड़े पर सवार हुए। उनके पीछे उनके दरबारी भी घोड़ों पर सवार हो चल पड़े।

शाही कारवाँ जल्दी ही बीरबल के घर पहुँच गया। बीरबल अपने घर के आँगन में ही था। वह सूखी लकड़ियों से आग जला रहा था। उसने काफी ऊँचाई पर लकड़ियाँ बाँध कर उस पर मिट्टी की हांडी रखी थी। आग तीन फीट परे जल रही थी।

बीरबल ने अपने हाथ में पकड़ी छड़ी फेंक दी और बादशाह की ओर दौड़ा। उसने अपने स्वामी का आदर बादशाह के सामने झुककर तथा धरती को छूकर प्रकट किया? फिर बादशाह के आदेश का इंतजार करने लगा।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

इस महीने का विषय है खेल की दुनिया

१. कहाँ और कब भारत में पहली बार आधिकारिक रूप से क्रिकेट खेला गया?

२. रंजी ट्रॉफी की स्थापना कब हुई? रंजी ट्रॉफी पहली बार किसने जीता?

३. 'विसडन' द्वारा सम्मानित पहले भारतीय खिलाड़ी का नाम बताएँ।

४. किस भारतीय-टीम ने पहली बार 'डुरांड' कप जीता और कब?

५. एशियन फुटबॉल चैंपियनशिप से भारत ने पहली बार स्वर्णपदक कब जीता?

६. एशियाई खेलों की स्थापना कब और कहाँ हुई? किसने पहल की थी?

७. कौन हॉकी का विजड़ के नाम से प्रसिद्ध है?

८. प्रथम अर्जुन पुरस्कार किसने जीता?

(उत्तर पृष्ठ ६८ पर)

चन्दामामा को अपनायें!

आप अपने न्यूज़पेपरवाले से चन्दामामा को नियमित रूप से देने के लिए अनुरोध करें। आप इसे आम न्यूज़-स्टैंड या प्रधान बुकशॉप से भी पा सकते हैं। चन्दा के लिए www.chandamama.com लॉग करें अथवा CSHOP 54646 को SMS भी कर सकते हैं।

''बीरबल, तुम क्या कर रहे हो?''

''शहंशाह, मैं खिचड़ी बना रहा हूँ। दाल और चावल ऊपर रखी हांडी में है।''

''लेकिन'', बादशाह ने ऊँची आवाज में कहा, ''बर्तन के नीचे कोई आग नहीं है?''

''आग वहाँ है'', बीरबल ने इशारे से थोड़ी-सी जलती आग को दिखाया, जो तीन फीट दूर थी।

''दाल-चावल कैसे पकेंगे जब तक बर्तन के नीचे आग की गर्मी न हो?'' बादशाह ने पूछा। बीरबल थोड़ा मुस्कुराया।

''मुस्कुराना कोई उत्तर नहीं है।'' बादशाह उत्तेजित हो पूछने लगे, ''बताओ खिचड़ी कैसे पकेगी जब आग बर्तन से दूर हो?''

''शहंशाह, आपने मुझे बताया है कि दूर से भी गर्मी पहुँच सकती है।'' बीरबल ने अपनी दाढ़ी को खुजलाते हुए कहा।

''तुमने मुझसे सीखा है?'' बादशाह ने भौचक्के होकर देखा।

''आपने ही मुझे दिखाया है, शहंशाह! आपने कहा कि ठंडे पानी में खड़े धोबी को महल की छत पर जलते हुए लैंप की लौ से गर्मी प्राप्त हुई है।'' बीरबल ने साफ किंतु धीमी आवाज में कहा।

''अहा'', बादशाह को अब ख्याल आया कि बीरबल के मन में क्या चल रहा था। बादशाह पहरेदार की ओर मुड़े और कहा, ''जाओ और उस धोबी को पकड़ लाओ। उसे घोषणा के अनुसार इनाम मिलना चाहिए।''

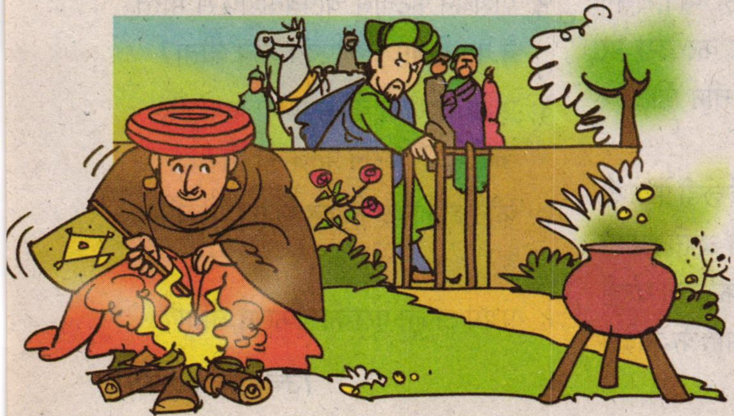

''शहंशाह, अब न्याय पूरी तरह हो गया है।'' फिर उसने हांडी के साथ वह सब उस ओर सरका दिया जहाँ आग थी। बीरबल हँसने लगा, बादशाह हँसने लगे, और समस्त दरबारी हँसने लगे। वे भी हँसने लगे जिन्हें बीरबल से ईर्ष्या थी, यह सोचकर कहीं बादशाह उन्हें सजा न दे दें।

- आर.के. मूर्ति

वैराग्य

महाराजा महाजनक संन्यासी बनने का निश्चय करके राजभवन की दूसरी मंजिल पर चले गए और उन्होंने लोगों के साथ भेंट करना बंद कर दिया। वे कभी भी नीचे न उतरे। इस तरह चार माह बीत गए। राजभवन उन्हें बन्दीगृह की तरह लगता था, वे उससे मुक्त होना चाहते थे।

महाजनक ने अपने एक निजी सेवक को बुलाकर कहा, ''हमारे लिए गेरुआ वस्त्र और मिट्टी का पात्र लाओ।'' इसके बाद उन्होंने नाई को बुलवाकर अपना सिर मुँडवा लिया और गेरुए वस्त्र धारण कर, हाथ में मिट्टी का पात्र लेकर ऊपर से नीचे उतर आए। जब वे सीढ़ियों से नीचे आ रहे थे, उस समय रानी ने उन्हें देखा, लेकिन पहचाना नहीं। राजा उतर कर चले गए।

पर शीघ्र ही सच्चाई प्रकट हो गयी। रानी सीवली देवी ने दूसरी मंजिल पर जाकर देखा, महाराज के केश नीचे गिरे हुए थे। उसने सारे राजभवन में राजा की खोज करवायी, पर उनका कहीं पता न लगा। अंत में सब परिजनों को पता लगा कि महाजनक ने संन्यास-दीक्षा ले ली है। सुनकर सब लोग रो पड़े और राजा महाजनक जिस दिशा में गये थे, उस दिशा में आगे बढ़े। सीवली देवी अन्य रानियों को साथ लेकर पति की खोज में निकल पड़ी। एक वृक्ष के नीचे पति को संन्यासी वेश में देखकर सब रानियों ने उन से वापस लौटने की विनती की, लेकिन महाजनक ने स्वीकार नहीं किया।

सीवली देवी ने राज्य के एक विश्वसनीय उच्च अधिकारी को बुलाकर कहा कि राजधानी में जगह-जगह गुप्त रूप से आग लगवा दी जाये। अधिकारी ने रानी के आदेश का पालन किया। रानी सीवली देवी ने पति के पास जाकर निवेदन

जातक कथा

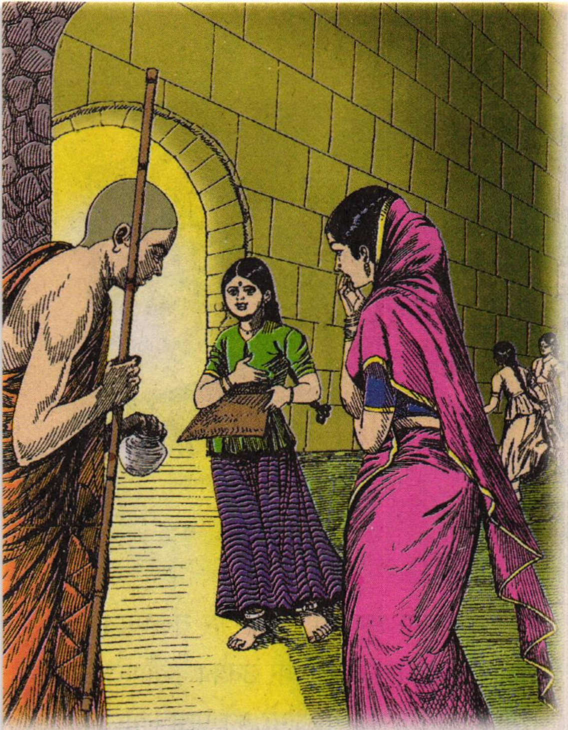

किया, ''महाराज, आपका मिथिला नगर जल रहा है। आपकी सारी संपत्ति अग्नि में स्वाहा हो रही है। उसकी रक्षा कीजिये!''

''रानी, संपत्ति के नाम पर मेरे पास कुछ नहीं है, फिर उसके स्वाहा होने का प्रश्न ही कहाँ उठता है?'' महाजनक ने उत्तर दिया।

इसके बाद राजा नगर के परकोटे के उत्तरी द्वार से चल पड़े। रानी और प्रजा के प्रमुख जन भी राजा के पीछे-पीछे चले। राजा ने उन्हें रोकने के विचार से पीछे मुड़कर देखा और पूछा, ''इस नगर का राजा कौन है?''

सबने एक स्वर में उत्तर दिया, ''महाराज, आप ही हमारे राजा हैं !''

''तब मैं आदेश देता हूँ, कोई भी इस लकीर को पार नहीं करेगा।'' कह कर राजा ने अपने दण्ड से मार्ग पर एक आड़ी रेखा खींच दी और आगे की तरफ़ चल दिये। कुछ देर सब ठहरे रहे, किसी को भी उस रेखा को पार करने का साहस नहीं हुआ।

पर रानी शीघ्र ही पति के पास पहुँच गयी और उनके चरण पकड़कर बोली, ''महाराज, आप मुझे, इन प्रजाजनों को देखिए! सबके सब किस तरह आपकी वापसी के लिए व्याकुल हैं!''

''मैंने सबको त्याग दिया है।'' महाजनक ने उत्तर दिया। ''तुम इस बात का प्रयत्न करो कि तुम्हारा पुत्र दीर्घायु मन, वचन और कर्म से निष्पाप रहकर व्यवहार करता हुआ राज्य का भार संभाल ले!'' राजा ने कहा।

काफ़ी दूर पैदल चलने के बाद वे एक नगर में पहुँचे। नगर-द्वार पर कुछ कच्चे मकान थे और वहाँ कुछ बच्चे खेल रहे थे। एक लड़की छाज में धान लेकर फटक रही थी। उसके एक हाथ में एक चूड़ी और दूसरे हाथ में दो चूड़ियाँ थीं। जब भी वह लड़की धान फटकती, तब एक हाथ की चूड़ियाँ खनखना उठतीं।

इस दृश्य को देख कर महाजनक के मन में एक विचार आया। उन्होंने अपनी पत्नी को इसके द्वारा कुछ उपदेश देकर राजधानी वापस भेजने का निश्चय किया। उन्होंने उस लड़की से पूछा, ''बेटी, तुम्हारा एक हाथ आवाज़ कर रहा है, दूसरा नहीं करता। क्या बात है?''

उस लड़की ने उत्तर दिया, ''महानुभाव, मेरे एक हाथ में दो चूड़ियाँ हैं, इसी से वह आवाज़

करता है। जहाँ तक आवाज़ का प्रश्न है, दूसरा तो निरर्थक है!''

राजा ने सीवली देवी की ओर मुड़कर कहा, ''रानी, तुमने उस लड़की की बात सुनी? वह कहती है, दूसरा निरर्थक है। यदि मैं तुम्हें अपने साथ चलने दूँगा, तो उस लड़की की नीतिपूर्ण बात का अतिक्रमण करनेवाला साबित होऊँगा।''

रानी ने सिर झुकाकर अपने पति को आगे बढ़ने दिया। पर दूसरे ही क्षण वह व्याकुल हो उठी और तुरन्त दौड़कर अपने पति के पास जा पहुँची और उनके साथ-साथ चलने लगी।

कुछ देर बाद वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ एक लुहार कुछ हथियार बना रहा था। उसने एक बाण को हाथ में लिया और उसकी नुकीली धार की जाँच करने के लिए उसे एक आँख की सीध में रखकर दूसरी आँख बंद कर ली।

राजा ने लुहार से पूछा, ''बेटा, जब तुम्हारे दो आँखें हैं, तब बाण की धार की जाँच करने के लिए तुमने एक आँख बन्द क्यों कर ली?''

''महानुभाव, दोनों आँखों से देखने पर हथियार की सिधाई का पता नहीं चल सकता। बाण की धार की जाँच करने के लिए तो एक ही आँख से देखना पड़ेगा। इस काम में दूसरी आँख निरर्थक है।'' लुहार ने जवाब दिया।

''रानी, तुमने इस लुहार का उत्तर सुना?'' राजा ने कहा। रानी सीवली देवी ने समझ लिया कि उसके पति महाजनक अब वापस न लौटेंगे। वह दुख और व्याकुलता के कारण अचेत होकर गिर पड़ी। महाजनक तेज़ क़दमों से एक विशेष दिशा में जाकर जंगल में ओझल हो गये।

थोड़ी देर बाद सारा राज-परिवार और प्रजाजन वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने रानी के चेहरे पर पानी के छींटें दिए। रानी सीवली देवी होश में आयीं। रानी विषाद युक्त मन से सारे परिवार के साथ राजधानी मिथिला लौटीं और अपने पुत्र दीर्घायु का राज्याभिषेक संपन्न कराया। दीर्घायु के राजसिंहासन पर बैठने के बाद रानी सीवली देवी राजोद्यान में एक कुटी बनवाकर रहने लगीं और महाजनक हिमालय में चले गये। उन्होंने घोर तपस्या कर सिद्धि-पद प्राप्त की।

एक अमरीकी लोककथा

मोहवकास पर भारी हमला

यह बात बहुत पुरानी है। उत्तरी अमरीका में दो आदिवासी जातियाँ अक्सर झगड़ा किया करती थीं। मोहवकास तथा पेनब्बोबसकोट गाँव की बाबांकी जनजाति। एक बार मोहवकास ने पेनब्बोबसकोट गाँव पर हमला किया और उनकी एक लड़की मेनागन को कब्जे में कर लिया। एक दिन वह मक्का के खेतों से होकर गुजर रही थी। उसके सिर पर लकड़ियों का गठ्ठर था। अचानक उसने सफेद और बैंगनी रंग की बेल्ट देखी। आमतौर पर कोई स्त्री किसी बेल्ट को देखकर क्यों चिंतित होगी? लेकिन जैसे ही उसकी नज़र बेल्ट पर पड़ी, उसने बेल्ट को पहचान लिया। उसने यह बेल्ट अपने पति पुलवाग के लिए बुनी

थी। मेनागन को एहसास हुआ कि पुलवाग ने अपनी बेल्ट मुझे संदेश देने के लिए गिराई है। वह सोचने लगी कि वह उसे क्या कहना चाहता है?

शायद वह चाहता है कि मैं वहीं इंतजार करूँ, जहाँ बेल्ट पड़ी है। ऐसा समझकर वह खुशी से उछल पड़ी। लेकिन जैसे ही वह कैंप के पास पहुँची, उसका खिला चेहरा मायूस हो गया जैसे नाखुश बंदी का चेहरा होता है। वह नहीं चाहती थी कि मोहवकास को किसी प्रकार की जानकारी हाथ लगे।

मेनागन द्वार के पास बैठ कुछ मरम्मत करने लगी। जल्दी ही रात हो गई और मोहवकास सोने की तैयारी करने लगा। मेनागन ने सोचा कि भागना आसान होगा क्योंकि मोहवकास रात में पहरेदार तैनात नहीं करता । उसी वक्त उसे कुछ शोर सुनाई दिया। मेनागन का दिल डूबने लगा। उसने देखा कि मोहवकास के छः सिपाही दो बंदियों को घसीटते हुए ला रहे हैं। पुलवाग और उसका भाई था। पुलवाग जब उसके पास से गुजरा तो उसने ऐसा जताया मानो वह उसे जानता ही न हो। तत्क्षण वह भी समझ गई कि उसे यह नहीं बताना है कि वह उसे जानती है। मोहवक के मुखिया ने उसे बुला भेजा।

''ये आदमी वाबांकी बोली बोलते हैं। क्या तुम उनसे बातचीत कर सकती हो? पूछो कि वे यहाँ क्या कर रहे थे? क्या वे अकेले हैं?'' उसने

आदेश दिया। मेनागन ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। पुलवाग ने मसखरी के स्वर में उत्तर दिया, "चार चन्द्रमा गुजर गए, मोहवकास हमें मिलने आया था। हम उनके आभार को चुकाने आए थे।" जब मेनागन ने संदेश बता दिया तो मोहवकास बड़ी कठिनाई से हटा, क्योंकि जनजातियों में बदले की भावना से सैनिक टुकड़ी के साथ आनेवाले इसी प्रकार की भाषा बोला करते हैं। यह उनका ढंग है। तब, मुखिया ने मेनागन को आदेश दिया कि उनसे पूछे कितने सैनिकों के साथ वे आए हैं और उन्होंने अपना शिविर कहाँ लगाया है?

पुलवाग ने बताने से इंकार कर दिया।

मुखिया ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि उसे लकड़ी के खूँटे से बाँध दें और बाकी बंदियों को बंद कर दें।

मेनागन के गले में कुछ भारी हो आया। वह मोहवकास से दूर हो गई। वह यह जानकर भयभीत हो उठी थी कि पुलवाग और उसका भाई इतनी दूर से यहाँ आए हैं। उनकी किस्मत बड़ी कमजोर लगी क्योंकि यदि कोई सैनिक टुकड़ी सूर्योदय होते ही मोहवकास पर हमला करने को तैयार न हुई तो...?

मेनागन एक बार फिर द्वार पर बैठ कुछ मरम्मत करने लगी, लेकिन इस बार उसकी उँगलियाँ काँपने लगीं। एक मच्छर उसके दाहिने कान के पास गूँ...गूँ... करने लगा और उसके बाएँ कान के पास आकर बोला, "मेनागन, मैं तुम्हारी मदद करने आया हूँ। जैसा मैं कहूँ वैसा ही तुम करोगी तो तीनों की रक्षा हो सकती है।"

मेनागन को यह देख आश्चर्य हुआ कि एक मच्छर बोलता है। लेकिन स्थिति बहुत ही गंभीर थी और उसे उस समय मदद की सख्त जरूरत थी। मच्छर ने कहा, "जाओ और मोहवकास की मोहकासिन जूती लेकर छिपा दो। समस्त द्वार रस्सियों से बाँधकर बंद कर दो। तब जाओ और कैद किए हुए बंदियों को मुक्त कर दो और उन्हें कहो कि मुख्य द्वार पर जाकर हो हल्ला करें। आग

अपने चन्दामामा का मूल्यांकन करो

इसमें आपकी मनपसंद कहानी कौन-सी है?

a. पौराणिक, b. चित्रकथा, c. धारावाहिक

आप अपना उत्तर RYC <a/b/c> लिखकर 54646 पर SMS कर दो।

मोहवकास अपने जूतों के लिए इधर-उधर हैरान हो दौड़ने लगा किंतु सब व्यर्थ था। वह तथा उसके सैनिक अटके और द्वार पर गिर गए, जैसे ही उठकर बढ़ने लगे तो नुकीले पत्थर उनके पैरों में ऐसे चुभे कि वे दर्द से चीखने-चिल्लाने लगे।

पर पानी डालो। उसके बाद उनके साथ मिल जाओ।'' मेनागन ने ज़रा भी समय बर्बाद नहीं किया। उसने बिना किसी आहट के झोंपड़ी से जूते-चुराए और मृगचर्म के ढेर के नीचे छिपा दिए। हर द्वार को रस्सियों से बाँध कर बंद कर दिया। और दरवाजे के आगे नुकीले पत्थर बिखेर दिए।

वह चुपचाप बंदियों के पास गई और उन्हें दबी आवाज में सारी योजना समझा कर उनका बन्धन खोल दिया। तब पानी लेकर जलती आग पर इस प्रकार छिड़का कि जलती आग के बुझने की आवाज से मोहवकास की नींद टूट जाए। मेनागन जल्दी से मुख्य द्वार की ओर भागी। इसी बीच पुलवाग और उसके भाई ने जलती लकड़ियाँ उठाकर अपने को सुरक्षित कर लिया। सब जोर-जोर से आवाजें निकालने लगे। शोर सुन बच्चे जोर-जोर से रोने लगे तथा कुत्तों के भौंकने की आवाजों ने दंगे को और भयानक रूप दे दिया। इसमें कोई शक नहीं था कि शोर इतना भयानक प्रतीत होता था मानो किसी सेना ने हमला बोल दिया हो।

उस रात धुंध भी ज़्यादा थी और भ्रम से आपस में एक दूसरे को मारने लगे। बहुत से मोहवकास के सैनिक गिरे और जख्मी हो गए। कुछ मुख्यद्वार की ओर भागने लगे, लेकिन मेनागन तथा अन्य लोग तैयार थे। ठक्...! हर मोहवक को एक ऐसा डंडा पड़ा कि वह वही चारों खाने चित्त जा पड़ा और चारों ओर उसे तारे दिखने लगे। मेनागन तथा उसके साथी झटपट अपने शिविर में आए और अपने गाँव की ओर चले गए।

मोहवकास जब दर्द से कहराता हुआ उठा तो उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि वह जिंदा है, मरा नहीं। उन्होंने अपने आपको बड़ी गर्मागर्मी से मुबारकबाद दी कि पेनब्बोबसकोट की खूंखार सेना से लड़े और बच गए। वे इतना ही जानते थे कि उनकी सेना में दो तगड़े सैनिक थे और एक बहादुर नारी।

अब, तुम्हें यह संदेह होगा कि मच्छर ने मुख्य भूमिका निभाई। यह मच्छर और कोई नहीं उनके महान मुख्य आराध्य गलूस्केप थे, चमत्कारी शक्तियों से युक्त देवता, जिनकी आराधना बाबांकी जाति करती है। उन्होंने अपने को क्षुद्र मच्छर बना मेनागन को मोहवक जाति के कब्जे से मुक्त किया, बाबांकी जाति की रक्षा की।

- रमा रमेश द्वारा पुनर्कथित

रामायण

रावण जब अशोकवन में पहुँचा, तो सीता ज़मीन पर बैठी, दुःखी हो राम के बारे में सोच रही थीं। उनके चारों ओर भयंकर राक्षस स्त्रियाँ थीं। रावण ने सीता के पास आकर कहा, ''तुम जिस राम पर गर्व कर रही हो, वह युद्ध भूमि में मारा गया है। अब तुम्हारे लिए मेरी पत्नी होने के सिवाय कोई और रास्ता नहीं है। वह बेचारा राम बड़ी वानर सेना लेकर, मुझे मारने के लिए उत्तरी समुद्र तट पर आया। जब सब थके-माँदे सो रहे थे, तो हमारे भेदिये सब कुछ देख आए। तब हमारा प्रहस्त, राक्षस सेना के साथ गया और उन पर उसने बाण वर्षा कर दी, सोते हुए राम का सिर काट दिया। लक्ष्मण और कुछ वानर जान बचाकर भाग गए। सुग्रीव, हनुमान, जाम्बवन्त, अंगद आदि, वानर वीर मारे गए।''

उसने एक राक्षस स्त्री से कहा, ''विद्युज्जिह्व को बुलाओ, वह युद्ध भूमि से राम का सिर लाया है।'' विद्युज्जिह्व राम का सिर और बाण लाया। रावण की आज्ञा पर, उन्हें सीता के सामने रखकर, वह तुरंत पीछे हट गया।

सामने के सिर में, आँख, बाल, चूड़ामणि आदि देखकर, सीता ने सोचा कि वह सचमुच राम का सिर है। यह देख कि राम मारे गए हैं, वे दुःख के सागर में गोते लगाने लगीं। उन्होंने कैकेयी को कोसा। अपने को भी यह सोच कोसने लगीं कि उनसे विवाह करने के कारण ही राम की यह दुरावस्था हुई है। उन्होंने रावण से प्रार्थना की कि उनका सिर राम के सिर से मिला दिया जाये और शरीर, शरीर से।

इतने में द्वारपाल ने आकर रावण से कहा कि

युद्ध काण्ड - ५

की ध्वनि सीता और सरम को भी सुनाई दी। "देखा, राक्षस सेना युद्ध के लिए अभी निकल रही है।" सरम ने सीता से कहा। सीता यह देख आश्वस्त हुई। सरम ने सीता से कहा, "अगर तुम चाहो, तो मैं अभी राम के पास जाकर कह सकती हूँ कि तुम सकुशल हो। कहो?"

"यदि तुम मेरी इच्छा ही पूरी करना चाहती हो, तो मालूम करके आओ कि रावण क्या कर रहा है।" सीता ने कहा।

सरम ने जाकर कहा, "रावण को उसकी माँ और अविद्ध नामक बूढ़े मन्त्री ने तुम्हें छोड़ देने के लिए बहुत समझाया। पर रावण ने उनकी बात न सुनी। उसने कहा, जीते जी, वह तुमको न छोड़ेगा। वह अब मन्त्रियों के साथ विचार परामर्श कर रहा है। अब उसकी मौत होकर रहेगी।"

प्रहस्त आदि मन्त्री, रावण के दर्शन के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। रावण सभा में चला गया, उसके जाते ही राम का सिर और बाण अन्तर्धान हो गए।

विभीषण की पत्नी सरम ने सीता के पास आकर, उन्हें आश्वासन देते हुए कहा, "राम, वानर सेना के साथ, समुद्र पार करके, दक्षिणी तट पर आ गये हैं।" यह जानकर ही रावण, मन्त्रियों से बातें करने गया है। उसने सीता से फिर कहा, "रावण झूठ बोल रहा है कि राम मारे गये हैं। अभी युद्ध शुरू नहीं हुआ है। फिर राम का सिर यहाँ कैसे आ सकता है। यह सब रावण की चाल है। वह मायावी है। रावण की माया का विश्वास न करो।"

रावण उधर दरबार में अपने सेनापतियों से कह रहा था, "भेरी बजाकर, राक्षस सेनाओं को सावधान करो। उनको कुछ न बताओ।" भेरी

उसी समय वानर सेना का शोर पास आने लगा, वह शोर सुन, राक्षसों के चेहरे फीके पड़ गए। रावण के दरबारियों ने भी उस शोर को सुना।

"राम का समुद्र पार करके आना, उसके बल पराक्रम के बारे में सुनकर, तुम सबका चिन्तित हो उठना मैंने देखा है।" रावण ने अपने दरबारियों से कहा।

तब रावण से उसकी माता की तरफ़ के एक बूढ़े बन्धु माल्यवन्त ने कहा, "राजा, यही राजनीति है कि अपने से निर्बल के साथ युद्ध किया जाए और अधिक बलवान के साथ सन्धि की जाए। चूँकि हमारी ओर अधर्म है– इसलिए ही हम बलहीन हैं। इसलिए हमारा राम से सन्धि कर लेना और सीता को उसे सौंप देना उपयुक्त

है। हमारी लड़ाई का कारण सीता ही है न? युद्ध तुम्हारे लिए भी लाभप्रद नहीं है। तुमने बहुत-से देवों से वर पाया है कि तुम मरोगे नहीं, परन्तु तुम अब आए हुए मनुष्य, वानर, लँगूर और भालुओं आदि से नहीं मारे जाओगे, इस बारे में तुम्हें कोई वर नहीं मिला हुआ है। शकुन भी अच्छे नहीं हैं।''

यह सलाह सुन, रावण उबल पड़ा। उसने कहा, ''बन्दरों के साथ आया हुआ राम मुझसे अधिक बलशाली है, यह तुम किस बूते पर कह रहे हो? इस छोटे से समुद्र को पार कर लेने मात्र से ही क्या राम महाबलशाली हो गया है? आखिर है तो वह मनुष्य ही। जब मुझे देवता नहीं जीत सके तो क्या मैं मनुष्य से ही हार जाऊँगा? तुम सब की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। इसलिए तुम सब राम से और उसके बन्दरों से डर रहे है। मैं सोच समझकर सीता को लाया हूँ, क्या मैं राम के भय से उसे छोड़ दूँगा? मान भी लिया जाये कि राम मुझसे अधिक बलवान है, तो उसे मेरा सिर काट लेने दो, पर मैं उसके सामने नहीं झुकूँगा। यह मेरे स्वभाव के विरुद्ध है। मैं जीने के लिए राम से डरनेवाला नहीं हूँ।''

यह सुन, माल्यवन्त ने शर्मिन्दा हो, सिर झुका दिया। रावण ने अपने मन्त्रियों से सलाह कर नगर की रक्षा की व्यवस्था की। दक्षिणी द्वार पर महोदर और महापार्श्व नियुक्त हुए। पश्चिमी द्वार पर इन्द्रजित नियुक्त किया गया। उत्तरी द्वार पर शुक सारण के साथ, रावण स्वयं गया। पूर्व की ओर प्रहस्त को रखा गया। विरुपाक्ष अनेक राक्षस वीरों के साथ, नगर के मध्य प्रान्त में ही रह गया।

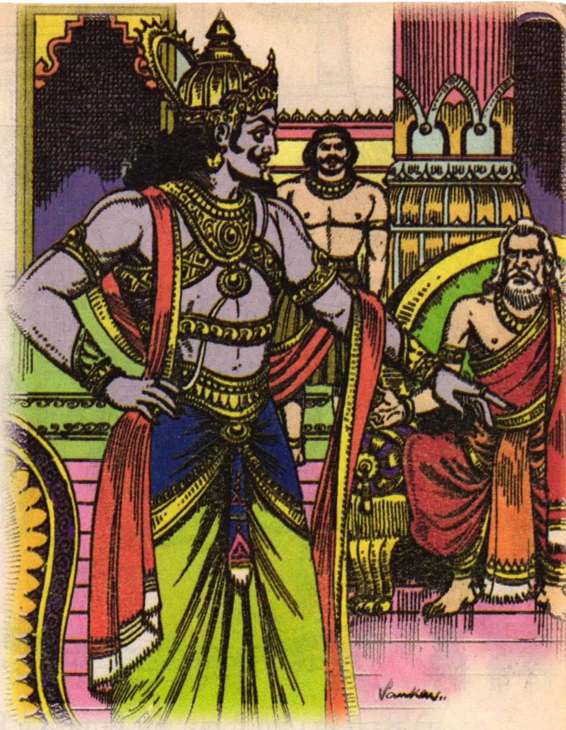

लंका नगर की रक्षा की यह व्यवस्था, विभीषण के चारों मन्त्री, पक्षी रूप में आकर देख गये और उन्होंने इसकी सूचना विभीषण को दे दी। विभीषण ने वह जानकारी राम को दे दी। राम ने लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान, जाम्बवन्त आदि वीरों से परामर्श किया और लंका नगरी पर किस प्रकार आक्रमण किया जाए, यह निर्धारित किया।

नील से कहा गया कि कुछ वानर सेना के साथ वह पूर्व द्वार की ओर जाकर प्रहस्त से युद्ध करे। अंगद को कहा गया कि दक्षिण द्वार पर महोदर और महापार्श्व से युद्ध करे। हनुमान को पश्चिमी द्वार की ओर जाना था। उत्तरी द्वार पर रावण चूँकि स्वयं था, इसलिए राम और लक्ष्मण ने उस ओर जाने का निश्चय किया। नगर के मध्य की सेना का मुकाबला सुग्रीव, जाम्बवन्त और विभीषण

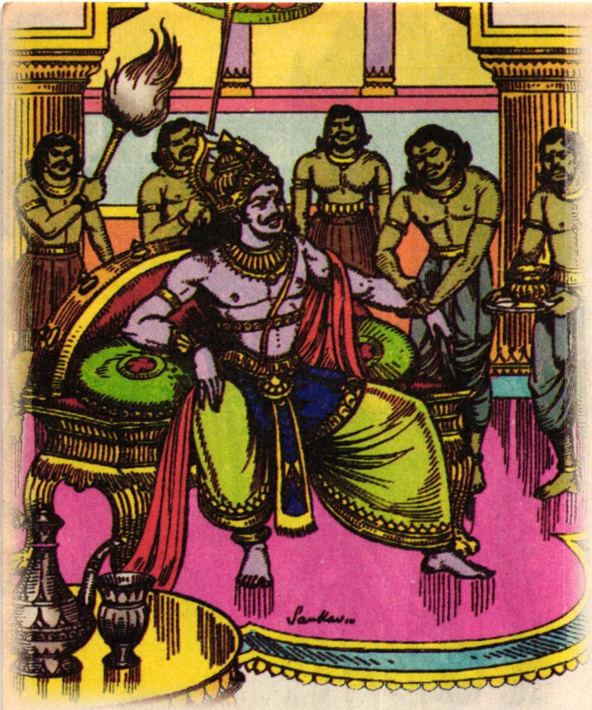

को करना था। राम ने एक और नियम रखा कि युद्ध करते समय सिवाय राम, लक्ष्मण, अंगद, हनुमान, सुग्रीव और विभीषण के कोई और नर रूप में न हो। सब वानर रूप में ही रहें ताकि वे आसानी से पहचाने जा सकें।

यह निर्णय होते ही राम सुवेल पर्वत पर चढ़ने लगे। उनके साथ लक्ष्मण, सुग्रीव और अन्य वानर प्रमुख पहाड़ पर चढ़ने लगे। वे जब सुवेल पर्वत पर चढ़ गये, तो सामने उनको लंका नगरी दिखाई दी। प्राकारों पर द्वार के आस पास काले राक्षस अस्त्र लेकर युद्ध के लिए तैयार खड़े थे। उनको देखकर वानर गरजे। उसी समय सूर्यास्त हो गया और पूर्ण चन्द्रमा का उदय हुआ।

राम आदि ने सुवेल पर्वत पर ही उस दिन रात को विश्राम किया।

अगले दिन सवेरे वानर सुवेल पर्वत के वनों में टहलने लगे। सुवेल पर्वत से त्रिकूट पर्वत पर बसी लंका नगरी की शोभा देखी। राम, लक्ष्मण और अन्य वानर प्रमुख वहाँ का स्वर्ग जैसा वैभव देख कर चकित हो उठे। उस नगर के बड़े-बड़े मकान, प्राकार, गोपुर आदि देखकर उनको आश्चर्य हुआ।

उनको तभी रावण दिखाई दिया। उसके ऊपर श्वेत छत्र था, चामर झले जा रहे थे और उसने अमूल्य रत्नों के आभूषण तथा भारी जरीदार कपड़े पहन रखे थे।

सब के साथ सुग्रीव भी रावण की ओर देख रहा था कि उसको यकायक गुस्सा आ गया। वह एक छलाँग में सुवेल पर्वत की चोटी से गोपुर पर चला गया। रावण को घूरकर देखा। हवा में उड़ा और रावण के मुकुट को लात मारकर ज़मीन पर आ खड़ा हुआ। रावण ने गुस्से में सुग्रीव को अपने हाथ से मारकर नीचे गिरा दिया। सुग्रीव गेंद की तरह उठा और उसने रावण को गिरा दिया। दोनों फिर जूझ पड़े। वे काफ़ी देर तक लड़ते रहे। आखिर रावण को तंग होकर माया युद्ध के लिए तैयार होता देख, सुग्रीव वहाँ से आकाश में उड़ गया। रावण ने सोचा कि वह फिर आएगा, पर वह राम की ओर उड़ गया।

राम ने सुग्रीव को गले लगाकर कहा, ''सुग्रीव, तुम राजा हो। इस तरह जल्दबाजी के काम तुम्हें नहीं करने चाहिए। हमें बड़ी चिन्ता हो रही है। यदि तुम पर कोई आपत्ति आ पड़ती तो हम सब का क्या होता?''

''तुम्हारी पत्नी को उठा ले जानेवाले उस दुष्ट को सामने पा, मैं यूँही देख नहीं पाया?'' सुग्रीव

ने कहा। वे तुरंत सुवेल पर्वत से उतरे और वानर सेना के साथ त्रिकूट पर्वत पर जाने लगे।

देखते-देखते वानरों ने लंका नगरी को घेर लिया। राम के आज्ञानुसार जिस द्वार पर जिन-जिन योद्धाओं को लड़ना था, वे सब अपने स्थान पर तैनात हो गए।

तब राम ने अंगद को बुलाकर कहा, ''अंगद, तुम निर्भय हो, लंका का प्राकार पार कर जाओ। जहाँ रावण है वहाँ जाओ। उससे मेरी तरफ से यह कहो, 'रावण, तुमने मेरी पत्नी को चुराया है, तुम्हें दण्ड देने के लिए मैं यम की तरह आया हूँ। तुम जिस बल के बूते मेरी सीता को उठा ले गये थे, वह बल अब दिखाओ। यदि सीता को मुझे सौंपकर तुमने मेरी शरण न माँगी, तो मैं, तुम्हें और तुम्हारे कुल का नाश करके, विभीषण को राजा बनाऊँगा। तुम मूर्खों का भरोसा कर रहे हो, इसलिए तुम में राज्य करने की योग्यता नहीं रह गई है। यदि शरण नहीं चाहते हो, तो मुझ से युद्ध करके और मेरे हाथों मरकर पवित्र हो जाओ।'

''हे बल, बुद्धि और गुणों के धाम बालिपुत्र, अंगद तुम मेरे काम के लिए लंका जाओ। तुमको बहुत क्या समझाऊँ? मैं जानता हूँ, तुम परम चतुर हो। शत्रु से वही बातचीत करना जिससे हमारा काम हो और उसका कल्याण हो।''

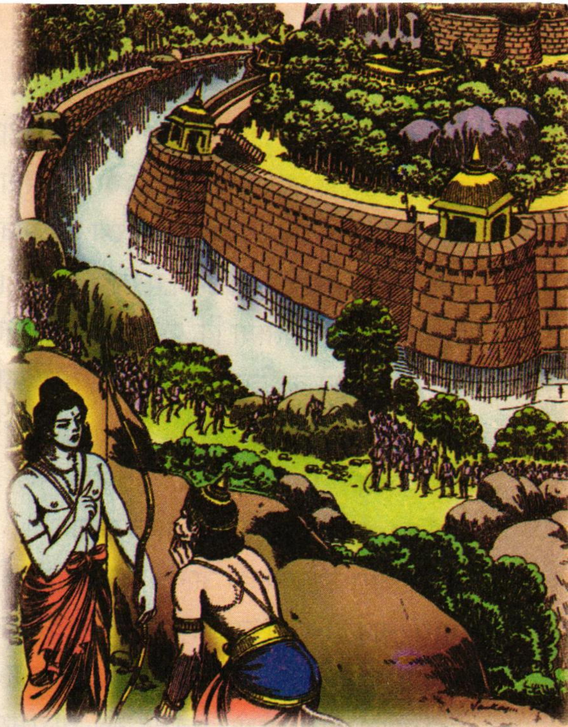

अंगद यह सन्देश लेकर आकाश में उड़ा और लंका नगरी में गया। लंका में प्रवेश करते ही रावण के पुत्र से भेंट हो गई जो वहाँ खेल रहा था। बातों-ही बातों में दोनों में झगड़ा बढ़ गया क्योंकि दोनों गजब के बलवान थे और फिर दोनों की युवावस्था थी। उसने अंगद पर लात उठाई। अंगद ने पैर पकड़कर उसे घुमाकर ज़मीन पर दे पटका। रावण-पुत्र की मृत्यु जानकर राज्य में कोलाहल मच गया कि जिसने लंका जलाई थी वह बंदर फिर आ गया है। सब अत्यन्त भयभीत हो विचार करने लगे कि विधाता अब न जाने क्या चाहता

चन्दामामा के घर का २०-२० क्रिकेट के उत्तर :

१. स्टीफन फ्लेमिंग; २. ८ से १०; ३. मुंबई इण्डियन्स; ४. चेन्नै सुपर किंग्स, राजस्थान रायॅल्स और डेक्कन चार्जर्स; ५. ह्यूग ली; ६. पी सी ए स्टेडियम; ७. रॉयल चैलेंजर्स बंगलौर; ८. कोलकाता नाइट राइडर्स; ९ मुंबई इण्डियन्स; १०. दिल्ली डेरडेविल्स; ११. पूमा; १२. सोहेल तनवीर।

है। वे बिना पूछे ही अंगद को रावण के स्थान की राह बता देते थे। रावण जहाँ अपने घर में अपनी पत्नियों के साथ सलाह मशवरा कर रहा था अंगद वहाँ गया और रावण की बगल में खड़ा हो गया। उसने रावण को बताया कि वह कौन है, राम ने जो कुछ कहने के लिए कहा था, उसे वैसा का वैसा कह सुनाया।

यह सुन रावण अपना क्रोध रोक न सका। वह बार-बार चिल्लाया, "इस अंगद को मार दो।" चार राक्षस उसे पकड़ने आये। अंगद ने उनको पास आने दिया। फिर उनको बगल में दबाकर वह रावण के घर के प्राकार पर जा खड़ा हुआ। वह प्राकार पर्वत-सा था। जब वह उड़ा, तो राक्षस नीचे गिर गए।

उस प्राकार का गोपुर अंगद को दिखाई दिया। जब अंगद ने उस गोपुर को एक लात मारी तो वह टूटकर नीचे गिर गया। अंगद ने अपना नाम इतने जोर से चिल्लाया कि सब सुन लें। फिर वह उड़कर राम के पास आ गया।

इतने में कुछ राक्षसों ने आकर बताया कि वानरों ने पूरी लंका को चारों ओर से घेर लिया है।

चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी

विभीषण की पत्नी का नाम क्या था, जिसने अशोकवन में आकर सीता को सांत्वना दी थी।

a. तारा, b. सरम, c. मंदोदरी

आप अपना उत्तर CRQ <a/b/c> लिखकर 54646 पर SMS कर दो। बेतरतीब चुने एक भाग्यशली विजेता को चन्दामामा की कॉमिक काम्बो पैक दिया जाएगा।

रावण क्रुद्ध हो अपने नगर को घेरनेवाले बन्दरों की सेना देखने के लिए अपने महल की छत पर आया। वानरों को लंका की सारी भूमि पर देख उसको आश्चर्य और भय हुआ।

उसने बन्दरों के इतनी भारी संख्या में आने का अनुमान नहीं किया था। फिर भी, उसने अपने आप को दिलासा देते हुए सोचा कि चाहे ये कितनी भी भारी संख्या में हों, जानवर और मनुष्य उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

केशवती का जूड़ा

सोनापुर की राजकुमारी केशवती बड़ी सौंदर्यवती थी। बारह वर्ष की केशवती का सबसे बड़ा आकर्षण उसका जूड़ा था। उसके केश घने, काले और लंबे थे। इसलिए उसके जूड़े के बारे में सारे राज्य में बड़ी चर्चा थी। केशवती को स्वयं अपने केशों पर नाज़ था।

केशवती इकलौती बेटी थी। इसलिए राजदंपति ने अत्यंत लाड़-प्यार से उसका पालन-पोषण किया। रानी अपनी पुत्री के बाल संवारना, वगैरह काम दासियों को न सौंपकर स्वयं किया करती थी। वह केशवती के केशों में साफ़ नारियल का तेल ही लगाती थी।

एक दिन केशवती तेल के कोल्हू के पास गई। बैलों का कोल्हू चलाना, नारियल का कोल्हू में पिसना, कोल्हू के भीतर तेल का बूँद-बूँद बनकर गिरना इत्यादि केशवती ने देख लिया। इसे देखने पर केशवती के मन में तेल के प्रति घृणा पैदा हो गई। इतने में कोल्हू पर रेंगनेवाली एक छिपकली कोल्हू में गिर गई। केशवती चीखकर बेहोश हो गई।

उस दिन से केशवती के मन में तेल के प्रति असहनीय घृणा पैदा हो गई। वह नारियल के तेल को बालों में लगाना बिलकुल पसंद न करती थी। रानी ने अनेक प्रकार से उसको समझाया, राजा ने भी राजकुमारी को मनाने की बड़ी कोशिश की मगर कोई फ़ायदा न हुआ। आख़िर राजा ने कोई दूसरा तेल लगाने की सलाह दी। पर केशवती के मन में सभी तेलों के प्रति घृणा पैदा हो गई। उसके केश अपनी चमक खोकर रेशों के समान हो गये।

"बेटी! तुम ज़रा भी समझने की कोशिश नहीं करती हो?" रानी ने कहा।

"मैंने सब कुछ समझा। पर तेल अपने बालों

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

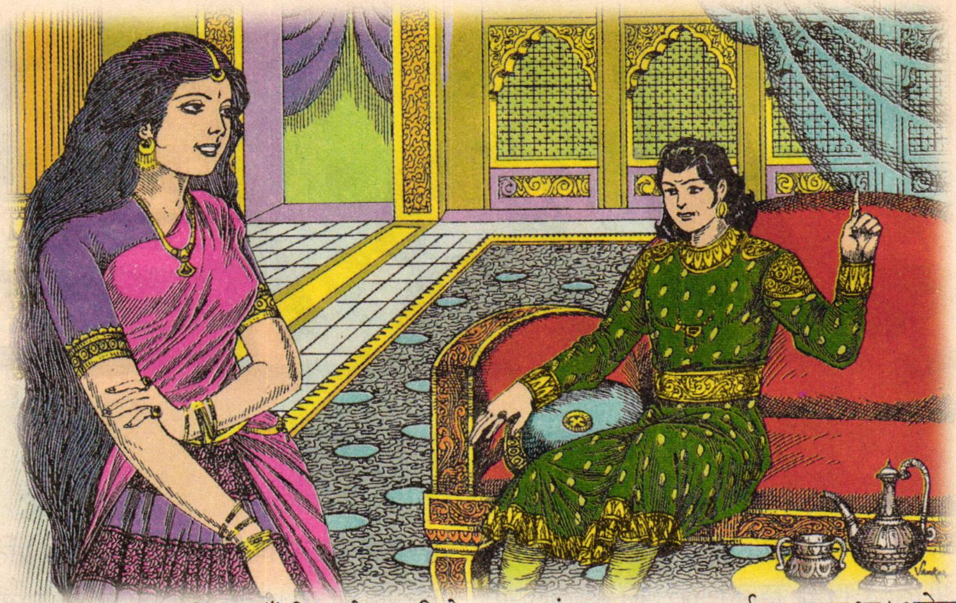

में आइंदा कभी नहीं लगाऊँगी।'' केशवती ने कहा।

''तेल न लगाओगी तो बाल कैसे बढ़ेंगे?'' रानी ने पूछा।

केशवती ने एक पौधे में पानी के बदले तेल डालना शुरू किया, जिससे शीघ्र ही वह पौधा मर गया। ''देखा है न, माँ?''

दरबारी वैद्यों ने आयुर्वेद के श्लोक पढ़कर बताया कि केशों के बढ़ने के लिए तेल चाहिए। मगर केशवती के निर्णय को बदलना उन से संभव न हुआ।

यह समाचार शीघ्र ही रजतपुर में पहुँचा। रजतपुर सोनापुर के पड़ोस में ही था। दोनों देशों के राजा मित्र भी थे। बहुत दिन पूर्व ही यह निर्णय हो चुका था कि केशवती का विवाह रजतपुर के राजकुमार कांचन के साथ किया जाये।

कांचन अब अट्ठारह वर्ष का युवक था। अनेक विद्याओं में वह प्रवीण था। उसने अपनी होनेवाली पत्नी के बारे में सुना और उसका मन बदलने का निश्चय किया। यह समाचार सोनापुर के राजा के पास भेजा। राजा ने उसे शीघ्र आने का संदेशा भेजा।

कांचन के आने की वार्ता सुनकर केशवती बहुत प्रसन्न हुई। बचपन में वह अक्सर सोनापुर में आया करता था और दोनों मिलकर खुशी के साथ खेला करते थे। लेकिन जब दोनों की उम्र बढ़ती गई, तब उन के बीच घनिष्टता भी घटती गई।

कांचन ने सोनापुर में प्रवेश करके केशवती के साथ नये ढंग से चर्चा शुरू की:

''केशवती, क्या तुम नहीं जानती हो कि दिमागी काम तेजी से करने के लिए तेल की

कितनी आवश्यकता होती है? वह दिमाग के लिए ईंधन के समान है। उसके बिना दिमाग ठीक से काम नहीं देता, बल्कि मनुष्य पागल हो जायगा।'' कांचन कुमार ने कहा।

''मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकती। पंडित हरिशास्त्री का सिर तो गंजा है। वे कभी तेल नहीं लगाते।'' केशवती ने उल्टा प्रश्न किया।

''इस समय वे अपने सिर में भले ही तेल न लगाते हों, लेकिन बचपन में तो लगाते थे?'' कांचन ने पूछा।

''इसीलिए उनका सिर गंजा हो गया है।'' केशवती ने झट कह दिया।

''छोटे प्राणी होते हुए भी चींटियाँ बड़ी अक़्लमंद होती हैं। तेल की एक भी बूँद दिखाई दे तो कई चींटियाँ वहाँ पहुँच जाती हैं और सारा तेल पी डालती हैं।'' कांचन ने कहा।

''हाँ! मैंने कई बार देखा है। चीनी के वास्ते भी चींटियों को जमा होते मैंने अनेक बार देखा है। इसलिए क्या मैं चीनी का शरबत बालों में लगा कर अपने बालों को बढ़ाऊँ?'' केशवती ने इतमीनान से उल्टा प्रश्न पूछा।

कांचन ने अब निर्णय कर लिया कि वार्तालाप के द्वारा केशवती को मनवाना संभव नहीं है, इंद्रजाल का प्रयोग करना होगा। यह निश्चय करके प्रसंग बदलते हुए बोला, ''हमारे बचपन के दिन कैसे मजे से कट जाते थे, तुम्हें याद है न केशवती? मैं भूल नहीं पाता।''

''क्यों नहीं? वे दिन बड़े ही अच्छे थे। चौबीसों घंटे खेल-तमाशे होते थे।'' केशवती ने उत्तर दिया।

''कमबख्त तेल की बात छोड़ दो। हम फिर ऐसे खेल खेलेंगे।'' कांचन ने कहा।

''इस उम्र में? क्या तुम पागल हो गये हो?'' केशवती ने कहा।

''तुम्हें खेलने की ज़रूरत नहीं, लेकिन मेरे खेल तुम्हें देखने में कोई आपत्ति नहीं है न?'' कांचन ने पूछा।

''नहीं, ज़रूर देखूँगी! तुम पहले जैसा अपना इंद्रजाल दिखाओ।'' केशवती ने कहा।

''मैं तुम को एक नया इंद्रजाल दिखाऊँगा। लेकिन मेरी एक शर्त है! वह शर्त तुम्हें पसंद आ गई तो मैं जो काम करने को कहूँगा तुम्हें करना होगा।'' कांचन ने पूछा।

''ज़रूर करूँगी!'' केशवती ने कहा।

दूसरे दिन सवेरे कांचन कुमार, राजा, रानी, तथा मंत्रियों को साथ लेकर अपना इंद्रजाल दिखाने केशवती के कक्ष में आ पहुँचा। उसने मेज़ पर एक बहुत बड़ी पानी से भरी नांद रखी। तब एक मोटे गत्ते का टुकड़ा मछली की आकृति में काट दिया। उस मछली की आकृति की लंबाई तीन इंच की थी, उसकी चौड़ाई डेढ़ इंच की। उस मछली के मध्य भाग में एक छेद किया और उसके साथ एक टुकड़ा काट कर रखा। तब कांचन ने मछली की उस आकृति को राजा, रानी तथा केशवती को दिखाया। फिर उसको नांद के पानी में तैरने दिया, तब केशवती से पूछा, ''केशवती! तुम इस मछली को अपने हाथ से ढकेले बिना और उस पर फूँक मारे बिना तैरने लायक़ बना सकती हो?''

केशवती ने आगे बढ़कर बड़ी देर तक उसे देखा, तब कहा कि उसके द्वारा ऐसा करना संभव नहीं है।

''मैं जो करने जा रहा हूँ, यदि वह तुम को पसंद आएगा तो मेरे कहे अनुसार करने का तुमने जो वचन दिया, वह तुम्हें याद है न?'' कांचन ने पूछा।

''हाँ, मुझे याद है! तुम अपना इंद्रजाल दिखाओ तो।'' केशवती ने कहा।

कांचन ने एक बोतल निकाली। उसमें से एक बूँद द्रव मछली के मध्य भाग में स्थित छेद में डाल दिया। मछली अपने आप उस नांद में इधर-उधर तैरने लगी। सब लोग प्रसन्न हो उठे।

केशवती ने खुशी के मारे मुस्कुराते हुए पूछा, ''बताओ, मुझे क्या करना होगा?''

''इस बोतल में जो अद्‌भुत द्रव, पदार्थ है, उसकी वज़ह से मछली तैर सकी। मैं तुम से यही चाहता हूँ कि तुमको यह अद्‌भुत द्रव प्रतिदिन अपने सिर पर मलना होगा। इस बोतल के समाप्त होने पर दूसरी बोतल भिजवा दूँगा! ठीक है न?'' कांचन ने कहा। ''अच्छी बात है! ऐसा ही करूँगी।'' केशवती ने झट कह दिया।

राजा तथा रानी ने हँसते हुए एक दूसरे की ओर देखा। वे जानते थे कि उस बोतल में सुगंधित नारियल का तेल भरा है। उस नारियल के तेल की बूँद ने ही कागज की मछली को तैरने लायक़ बना दिया था।

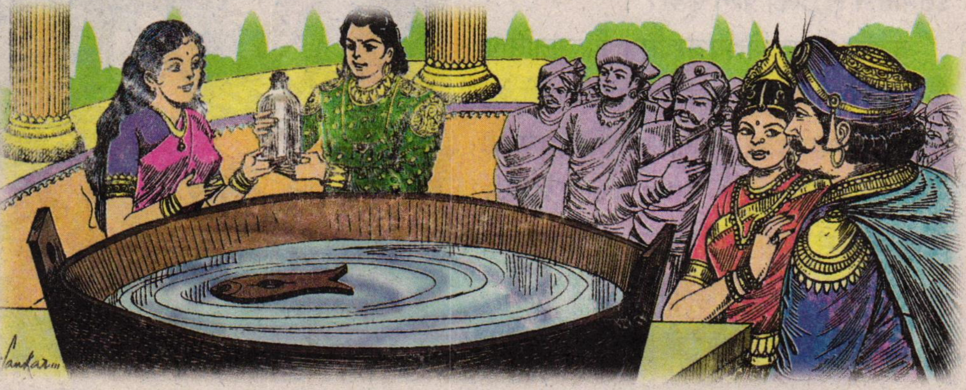

आर्य
4
लाल मणि की खोज
चित्रः गाँधी अय्या
प्रभात, आर्य वफादार सलाहकार है, वह पूर्वा के प्रांत में जाकर लापता हुए बच्चों का पता लगाता है। लेकिन साधु-आर्य से कहता है कि उसे स्वयं जाना चाहिए।
मैंने वह सब कह दिया है जो मुझे कहना था, आर्य।
मैं अभी इसी वक्त कुछ करता हूँ।
इसी बीच, प्रभात राज्यपाल के साथ बातचीत कर रहा है।
हमने पूर्वा की सब छोटी बड़ी गलियों में खोजा है।
...लेकिन अफवाह के सिवाय कि मादा भेडिया राजमहल के पास देखी गई है जहाँ से बच्चे लापता हो गए, वहाँ कुछ नहीं मिला।
तुम उन्हें अफवाह क्यों कहते हो? अगर वह सच हो तो?
अगर यह ज़रा भी सत्य होता तो हमारे शिकारी अभी तक उस खूँखार जानवर को ढूँढ निकालते।

साधु के वचन अस्थिर हैं आर्य! काले कौवे के पंजों ने उसके दिल में डर बिठा दिया है।
सुकन्या, मुझे शायद यात्रा पर जाना होगा, जल्दी ही।
कहाँ?
पूर्वा, लेकिन इसका किसी को पता न चले।
नहीं, परन्तु क्यों नहीं?
मुझे अपनी मंजिल अवश्य पानी है।
मैं भी आपके साथ चलूँगी।
शान्तिपुर को तुम्हारी जरूरत है, रानी ! मैं अपने राज्य का विश्वासपात्र तुम्हें मानता हूँ।
कहीं से, एक काला कौवा अपने पंजों में एक चूहा दबाए कक्ष में प्रवेश करता है।

क्या तुम्हें वे कहानियाँ याद हैं जिन्हें तुम ने बचपन में सुना था? एक दिन मरा चूहा उडता है...
...स्वर्णद्वीप को निकलेगा।
इन सब का क्या अर्थ है?
क्या ये धमकी है?
लेकिन यह तो केवल कहावत है न? स्वर्णद्वीप होता ही नहीं है।
शायद, हमने इसे खोजने की कोशिश भी नहीं की।

प्रभात राज्यपाल से वार्तालाप करता रहा।
तो तुम्हें ऐसा कोई खूंखार जानवर नहीं मिला?
हमने दर्जनों भेड़िए मार दिए। लेकिन बच्चे लापता हो रहे हैं।
अगर तुम्हारी खोजबीन को वह चकमा दे रहा है तो वह कोई साधारण भेड़िया नहीं होगा।
तो तुम मुझे यह कह रहे हो कि वह कोई चमत्कारी जानवर है? हवा में कुछ ऐसा ही उड़ रहा है?
और तुम किसी जादू पर विश्वास नहीं करते?
जादू, चमत्कार सब उनके लिए हैं जो इस मर्त्य लोक में भीरु बनकर जीते हैं।
और डर मरणशील प्राणी को लगता है जो अपने आसपास के पत्थरों से आगे कुछ नहीं देख सकते।
संभव है। हमने न देखा हो।
और है

This Summer, avail the Coolest Combo Pack!

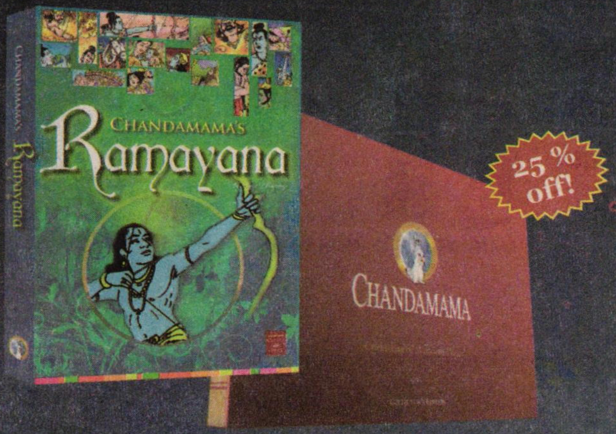

Buy Chandamama's Collector's Edition+Ramayana for Rs ~~898~~ 673* Only!

Chandamama's Ramayana is the first fully Illustrated Ramayana which comes in a single book.

Chandamama Collector's Edition features the best of Chandamama published over the last 60 years.

I want the Coolest Combo Pack:

Name.. Subscriber No ....

Address..

City .... State .... Pin ....

Telephone .... Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD for Rupees (in words) ....

Cheque/DD no .... Favouring Chandamama India Ltd

on ....bank. *(Send At-Par cheques or add Rs 60 for non-Chennai cheques)*

Please mail the order form to :

Chandamama India Limited, No. 2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelangarai, Chennai – 600 041. Phone: (044) 43992828

Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

Both these titles are available only in English at all leading bookshops.

To place an order go to www.chandamama.com

*For purchase outside India, the Coolest Combo Pack is available at $~~100~~ $80

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

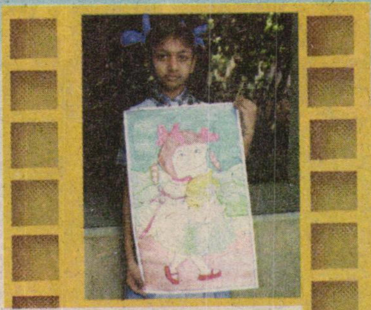

MAHANTESH C. MORABAD

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, २/५१३ (पुराना नं. ३/३९६), संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकन्ड मेईन रोड़, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

अक्षित आदित्य तिलक राजगुप्ता
मकान नं. २४४९/१३,
मुकंद लाल नैशनल कॉलज के साथ,
रादौर (यमुना नगर) - १३५ १३३
हरियाणा

विजयी प्रविष्टि

लगी भूख, मुन्नी करती इंतजार।
देर नहीं अब, खाना है तैयार॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. सन् १९२१ मुम्बई में; २. १९३४-३५, उत्तरी भारत को मुम्बई ने हराया; ३. महाराजा के.एस. रंजी सिंजी १८९६-९७ में; ४. मोहम्मद स्पोर्टिंग कलकत्ता ने शाही वारविकेश्री रेजीमेंट को १९४० में हराया; ५. सन् १९५१ नई दिल्ली में; ६. सन् १९५१ नई दिल्ली में, प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु; ७. भारत का ध्यानचंद; ८. सन् १९६१ में पी.के बनेर्जी फुटबॉल के खिलाड़ी ने।

Printed and Published by L. Subramanyan at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. **Editor : L. Subramanyan**

Log onto www.chandamama.com

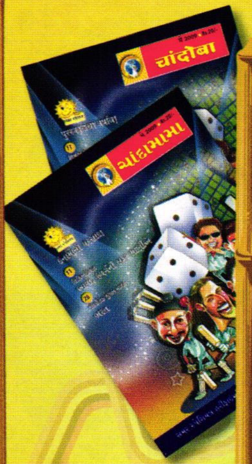

Your Chandamama is available in many avatars!

Regional Chandamama (9+ age group): Read your favourite stories in your own language! Chandamama takes you closer home even as your imagination soars!

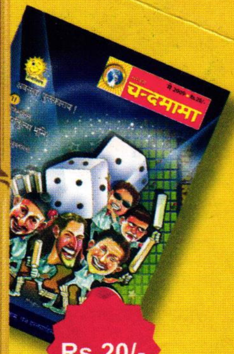

Rs.20/-

Your Language, Your Chandamama.

* Ramayana * Vikram-Vetal * Jataka * Akbar-Birbal

Available in 12 Languages:
Telugu, Hindi, Marathi, Oriya, Kannada, Bengali, Tamil, Malayalam, Gujarati, Assamese, Sanskrit, Santali

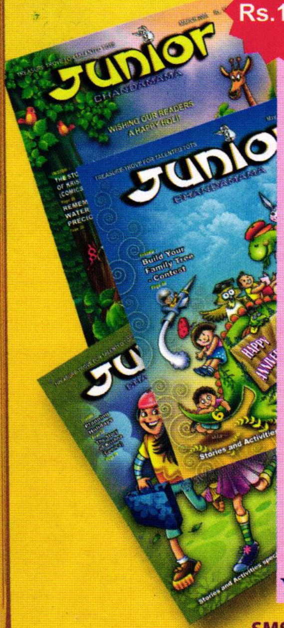

Rs.15/-

Junior Chandamama
(4+ age group):
A magazine for the little ones peppered with activities, pictures, and stories that will grip their imagination.

Make friends with **Mintoo, Gooba,** and a host of other whacky characters!

* **Picture story**
* **Puzzles & Crosswords**
* **Colouring**
* **Rebus**

You name it and it's got it!

Rs.25/-

Chandamama English
(9+ age group):
A children's magazine that has adapted itself to the changing needs of children across decades, Chandamama English offers you a delectable mix of the classic and the contemporary in 72 pages that value fun!

* **Sports**
* **Technology**
* **Contemporary stories**
* **Classics**

Revamped.
Redesigned.
Relevant. Read it!

SMS CSHOP to 54646 & we'll get in touch with you! Subscribe Now!

CHANDAMAMA (Hindi) May 2009 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CH(C)/217/09-11
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11